6 मार्च से 20 मार्च 2023

समाचार दर्पण 24

आमंत्रण मूल्य
15*

कविता, कहानी के साथ पठनीय और संग्रहणीय सामग्रियां

कहानी- प्यार को हो जाने दो

विरासत

ये हूं मैं

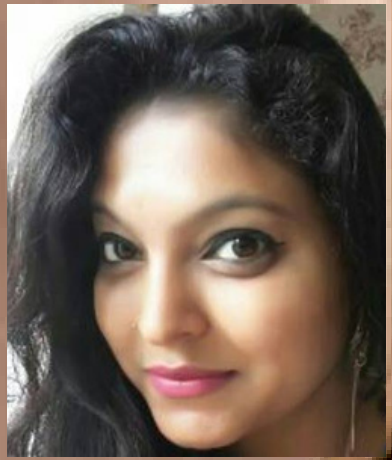

जज़्बात

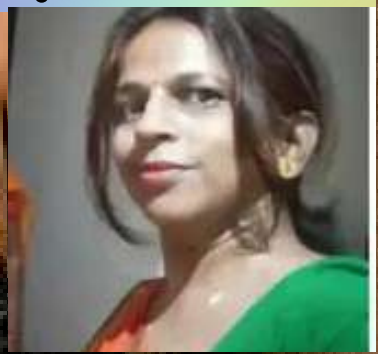

6 मार्च से 20 मार्च 2023

UDYAM-PB-12-0089227

समाचार दर्पण 24

हिंदी पाक्षिक

प्रधान संपादक
अनिल अनूप

कार्यकारी संपादक
मोहन द्विवेदी

प्रबंध उप संपादक
दुर्गा प्रसाद शुक्ला

वरिष्ठ उप संपादक
संजय सिंह राणा

संवाद व्यवस्था
चुन्नीलाल प्रधान

समाचार संपादक
अंजनी कुमार त्रिपाठी

राजस्थान ब्यूरो
सुरेन्द्र प्रताप सिंह

टीम सहयोगी
टिक्कू आपचे, रामनरेश चौरसिया,
सुमन कश्मीरी, राधेश्याम पुरवैया, सीता देवी, शगुन सिंह, उर्मिला थापर, आर के मिश्रा

कार्यालय संवाददाता
पवन सिंह, सुखविंदर सिंह, सीमा यादव, रेखा गुप्ता

विज्ञापन प्रभारी
सर्वेश द्विवेदी

विशेष संवाददाता
राकेश तिवारी

कला संपादक
मनमोहन उपाध्याय

संवाद सहयोगी
इरफान अली (देवरिया), प्रशांत झा(बिहार), अब्दुल मोबीन सिद्दीकी (यूपी), राम अवतार जांगिड़ (राजस्थान), विरेन्द्र हरखानी (जोधपुर) शंकर यादव (छत्तीसगढ़), मिश्रीलाल कोरी (नेपाल), हरिंदर सिंह (मध्य प्रदेश), परिमल(गुवाहाटी), मनोज उनियाल (हिमाचल), अरमान अली (जम्मू कश्मीर), राकेश सूद (पंजाब), ईसम सिंह (हरियाणा), इरफान (महाराष्ट्र), ममता कटारिया (गुजरात), गुफरान (कतर), सचिन बहलोल(बहरीन),

आगरा मंडल प्रभारी
ठाकुर धर्म सिंह ब्रजवासी

छत्तीसगढ़ ब्यूरो
हरीश चंद्र गुप्ता, सुमित गुप्ता

कार्यालय
सूफिया चौक लुधियाना पंजाब

संपर्क -8264173026
97922 62533

बहे मधुरता नेह रस....

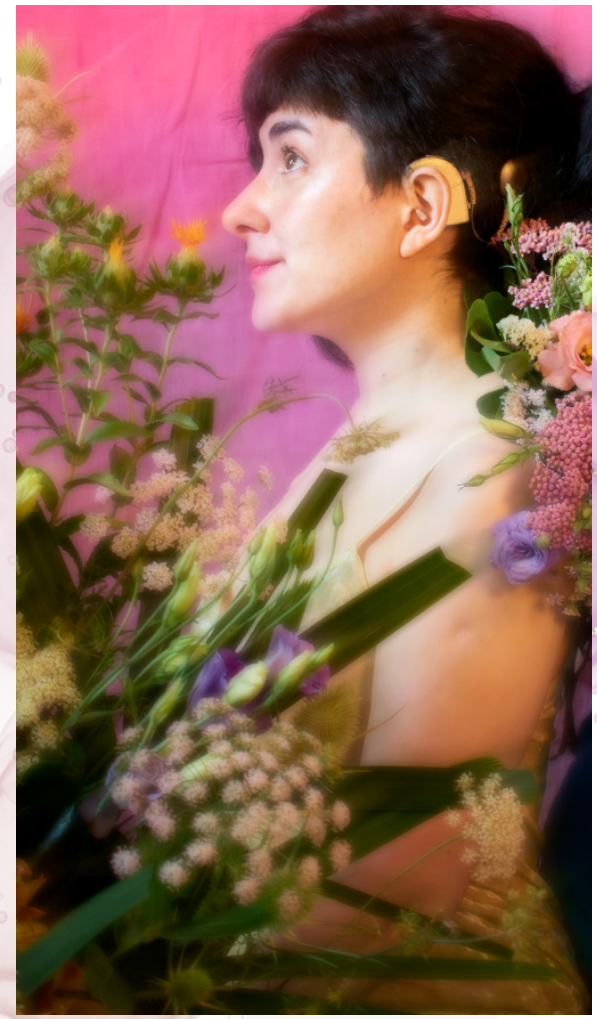

केवल खेलें रंग से, रहें भंग से दूर।
खायें गुझिया प्रेम से, खुशी मिले भरपूर।।
कीचड़ मिट्टी पेंट से, करें सदा परहेज।
पत्ती-फूलों से बनें, रख लो रंग सहेज ।।
गले मिले हम प्रेम से, होली का संदेश।
हरे वृक्ष काटे नहीं, होगा सुंदर देश।।
झोपड़ महल कुटीर में, सद्भावों का नीर।
पले परस्पर प्रीति उर, बाँटे सुख हर पीर।।
मुट्ठी से नित झर रही, जैसे झरती रेत।
जीवन रंग सँवार लें, मूरख मानव चेत।।
भीति गिरा सब द्वेष की, गहें प्रीति का पंथ।
बहे मधुरता नेह रस, होय विषमता अंत।।

प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बांदा उत्तर प्रदेश

शुभकामनाएं

आप सबको बहुत बहुत मुबारक हो

8 मार्च 2023

समाचार दर्पण 24
परिवार

संपादकीय -थोड़ा तुम थोड़ा मैं फागुन हो जाऊँ

खेतों में फसलों की रंगत बदल गई है। सरसों के पीले फूल खत्म हो गए हैं और वह फलियों से गदाराई है। मटर और जौ की बालियां सुनहली पड़ने लगी हैं। जवान ठंड अब बुढ़ी हो गई है। हल्की पछुवा की गलन गुनगुनी धूप थोड़ा तीखी हो गई है। घास पर पड़ी मोतियों सरीखी ओस की बूँदें सूर्य की किरणों से जल्द सिमटने लगी हैं। प्रकृति के इस बदलाव के साथ फागुन ने आहिस्ता- आहिस्ता क़दम बढ़ा दिया है। टेंशू , गेंदा और गुलाब फागुन की मस्ती में खिलखिला रहे हैं। अमराइयों में आम में लगे बौरों की मादकता अजीब गंध फैला रहीं है। भौंरे कलियों का रसपान कर वसंत के गीत गुनगुना रहे हैं। पेड़ों से पत्ते रिश्ते तोड़ वसंत के स्वागत में धरती पर बिछ जाने को आतुर हैं। प्रकृति और उसका ऐहसास फागुन के होने की दस्तक देता है। लेकिन इंसान बिल्कुल बदल चुका है। वह फागुन को जीना नहीं चाहता है। वह प्रकृति से साहश्चर्य नहीं रखना चाहता है। वह उसे भी जीतना चाहता है। खुद नियंता बनाना चाहता है। शायद यहीं उसकी भूल है। फागुन में भौजाई की ठिठोली और मसखरी जाने कहां खो गई। फागुन के गीतों पर ढोल- मंजीरे की थाप सुनाई नहीं देती है। पूर्वांचल में फागुन के गीत को फगुवा के नाम से पुकारा जाता है। लेकिन अब यह गीत और उसे गाने वाले लोग गायब हैं। अश्लील और गंदे भोजपुरिया गीतों का राज है। फाग गीत प्रकृति से जुड़े होते थे। लेकिन आजकल के गानों में सिर्फ अश्लीलता है। सभ्य समाज में ऐसे गीत सुनने लायक भी नहीं है। समय के साथ सब कुछ बदल रहा है। जबकि यह बदलाव तथ्य और अर्थहीन है।फागुन प्रकृति का रंगोत्सव है। फागुन में प्रकृति बदल जाती है। वह मलंग हो जाती है। उसमें अजीब मादकता आ जाती है। फागुन और बसंत के जरिए प्रकृति हमें संदेश देती है कि जिस प्रकार मैं विविधताओं से भरी हूं उसी तरह मानव जीवन में भी रंगों की विविधताएं हैं। सुख-दुःख, हर्ष, विस्माद, उल्लास, उत्सव भी जीवन के अपने रंग हैं। इसको खुल कर जीना चाहिए। फागुन जैसा जीना चाहिए।प्रकृति हमें संतुलन ही नहीं संतुष्टि भी सिखाती है। लेकिन हम उसके संदेश को पढ़ नहीं पाते हैं। जब उसे पढ़ने की कोशिश करते हैं तो फागुन यानी बसंत गुजर गया होता है और हम पतझड़ को लेकर फिर परेशान हो जाते हैं। क्योंकि हम सिर्फ बसंत को जीना चाहते हैं पतझड़ को नहीं। माघ- फागुन के मौसम में चरखी से निकले गन्ना के रस में दही मिला सीखरन तैयार होता था। फ़िर मटर की सलोनी के साथ उसे पीने का आनंद और स्वाद ही अलग था। अब गाँवों से गन्ने की खेती गायब हो चली है। कड़ाहे गुड़ और खांड की सोंधी गंध नाक को तृप्त नहीं करती। वह वक्त भी था जब पकती खांड में हम आलू डालने जाते तो दादा की खूब डाट मिलती। लेकिन सब कुछ बदल गया है। अब गांव कंकरीट के जंगल में तब्दील हो चुके हैं। धनाढ्यों ने कई मंजिला इमारतें खड़ी कर शहरी अभिजात संस्कृति का आगाज किया है। घरों में टिमटिमाती ढेबरी की जगह एलीडी और इनवर्टर की प्रकाश ने ले लिया है। कभी – कभी मिट्टी का तेल यानी केरोसिन न मिलने से दादी और अम्मा कड़ुवा तेल का दीपक जलाती थी। लेकिन अब यह बातें कहानियां हो गई हैं।प्रकृति में अल्हड़ फागुन जीवंत है लेकिन बदली परम्पराओं और हमारी सोच में वह बूढ़ा हो चला है। फागुन में रास है न रंग। बस होली के नाम पर औपचारिकता दिखती है। अब गालों पर गुलाल मलने सिर्फ रस्म निभाई जाती है जबकि दिल नई मिलते। गाँवों में फागुन वाली भौजाई गायब है। जब कच्चे मकान होते थे तो भौजाई और घर की औरतें माटी- गोबर लगाती थी।

-अनिल अनूप

गले में नरमुंड की माला और सांप; हवा में भस्म उड़ाते निकालते हैं शिव की बारात

-मोहन द्विवेदी

यहां सड़कें श्मशान की राख से पटी हैं। जिधर नजर जा रही, कोई चेहरे पर राख मल रहा है, तो कोई चिता भस्म से नहाया हुआ है। कोई इंसानी खोपड़ियों की माला गले में पहने, मुंह में जिंदा सांप दबाए नृत्य कर रहा, तो कोई जानवरों की खाल पहनकर डमरू बजा रहा। एक तरफ चिताएं जल रही हैं, दूसरी तरफ लोग उसकी राख से होली खेल रहे हैं। यानी खुशी और गम साथ-साथ।

आम इंसान जो चिता की राख से दूर भागता है, आज वो इसे प्रसाद मानकर एक चुटकी राख के लिए घंटों इंतजार कर रहा है। भीड़ इतनी कि पैर रखने तक की भी जगह नहीं।

काशी में होली से 4-5 दिन पहले ही मसान होली की शुरुआत हो जाती है। इसके लिए न सिर्फ देशभर से बल्कि बड़ी संख्या में विदेशी भी यहां मसान होली खेलने आते हैं। यही वजह है काशी विश्वनाथ मंदिर के आसपास एक भी होटल या गेस्ट हाउस खाली नहीं है।

रास्ते में जगह-जगह अघोरी बाबा करतब दिखा रहे हैं। कोई हाथ में नाग लेकर घूम रहा है, तो कोई आग से खेल रहा। चिता की भस्म हवा में इस तरह घुली है कि दूर-दूर तक मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा।

हरिश्चंद्र घाट पर दिन-रात शव जलते रहते हैं। यहां के मुख्य आयोजक पवन कुमार चौधरी हैं। वे डोमराजा कालूराम के वंशज हैं। मसान होली को लेकर पवन चौधरी एक पौराणिक कथा सुनाते हैं।

'राजा हरिश्चंद्र हमारे बाबा कालू राम डोम के हाथों इसी जगह पर बिके थे। उनकी पत्नी भी कालू राम डोम के यहां काम करने लगी थीं। जब राजा हरिश्चंद्र ने अपनी पत्नी तारा से अपने बेटे के अंतिम संस्कार के लिए भी कर चुकाने को कहा, तो तारा ने अपनी साड़ी फाड़कर कर चुकाया।

उस दिन एकादशी थी। राजा की इस सत्यवादिता को देखकर भगवान विष्णु प्रकट हुए और कहने लगे कि राजा तुम अपनी तपस्या में सफल हुए। तुम अमर रहोगे और यह दुनिया तुम्हें सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र के नाम से जानेगी।

भगवान विष्णु के पादुका निशान आज भी हरिश्चंद्र घाट पर हैं। इसी स्थान से चिता भस्म होली की शुरुआत की जाती है।'

मणिकर्णिका घाट के डोम लोकेश चौधरी बताते हैं, 'रंगभरी एकादशी के दिन शिव जी, माता पार्वती का गौना कराकर लाए थे। इसके बाद उन्होंने काशी में अपने गणों के साथ रंग-गुलाल की होली खेली, लेकिन वे श्मशान में बसने वाले भूत, प्रेत, पिशाच, किन्नर और अन्य जीव जंतुओं आदि के साथ होली नहीं खेल पाए थे।

इसलिए रंगभरी एकादशी के एक दिन बाद महादेव ने श्मशान में बसने वाले भूत-पिशाचों के साथ होली खेली थी। तभी से यहां मसान होली खेली जाती है।'

हरिश्चंद्र घाट पर शिव जी का एक मंदिर है। इसे मसान मंदिर कहा जाता है। यहां सुबह से ही उत्सव का माहौल है। शिवलिंग पर दूध, दही, शहद, फल, फूल, माला, धतूरा, गांजा, भस्म चढ़ाई जा रही है। पांच पुजारी रुद्राभिषेक करा रहे हैं। इसके बाद बाबा को धोती और मुकुट पहनाया जाता है। साल में एक ही दिन बाबा मसान मुकुट पहनते हैं।

इसके लिए एक रथ सजाया गया है। उस पर एक लड़के को शिव और एक लड़की को पार्वती बनाकर बिठाया जाता है। फिर चिता के सामने उनकी पूजा की जाती है। इसके बाद झांकी निकलती है।

झांकी में कीड़े-मकौड़े, सांप-बिच्छू लिए औघड़ों को देखते ही बनता है। इसमें महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। सिर पर मुकुट, हाथ में त्रिशूल, कटार, मुंह पर काला रंग और लाल रंग की बाहर लटकती जीभ। मानो साक्षात काली यहां उतर आई हैं।

डीजे पर भक्ति गाने बज रहे हैं। 'होली खेले मसाने में...काशी में खेले, घाट में खेले, खेले औघड़ मसाने में...।'

ये झांकी यहां से करीब 700 मीटर दूर अघोराचार्य कीनाराम के आश्रम जाती है। फिर आश्रम से बाबा भोलेनाथ की बारात निकलती है। बारात में भीड़ ऐसी कि तिल रखने की भी जगह नहीं है। अघोरी और तांत्रिक तो इसमें शामिल हैं ही, आम लोग भी इसमें शामिल होने के लिए लालायित हैं।

आज रंगभरी एकादशी है। हजारों लोग अघोरियों को देखने आए हैं। कोई बोल रहा है कि ऐसे-ऐसे बाबा साल में एक बार ही दिखाई देते हैं। इसलिए इनका दर्शन करना सौभाग्य की बात है। मीडिया और यूट्यूबर्स का भी यहां हुजूम उमड़ा है। हर कोई ऐसे अद्भुत दृश्यों को अपने कैमरे में कैद करना चाहता है।

दोपहर बाद करीब 2 बजे झांकी अघोरपीठ आश्रम पहुंचती है। इसके बाद सभी अघोरी बाबा और डोम राजा उसी जगह पहुंचते हैं, जहां भगवान विष्णु राजा हरिश्चंद्र के सामने प्रकट हुए थे। यहां एक मंच बना हुआ है। सभी मंच पर पहुंचते हैं।

इसके बाद शिवलिंग पर चढ़ाई गई चिता की भस्म मंगाई जाती है। अघोरी बाबा एक-दूसरे पर चिताओं की राख उड़ेलने लगते हैं। इसके बाद बाकी लोग भी एक-दूसरे पर भस्म लगाने लगते हैं।

पवन कुमार चौधरी बताते हैं, अघोराचार्य कीनाराम, कालू राम डोम के शिष्य थे। उन्होंने इसी हरिश्चंद्र घाट पर शिव की साधना की थी और सिद्धि हासिल की थी। इसी वजह से शिव-पार्वती की पालकी यहां लाई जाती है। यहां अघोरपीठ की स्थापना की गई है। अघोरपंथ के लोग कीनाराम को शिव के रूप में भी पूजते हैं।

हर दिन अघोरपीठ से एक व्यक्ति हरिश्चंद्र घाट आता है और चिता की सुलगती लकड़ी कंधे पर रखकर अघोरपीठ ले जाता है। इन्हीं चिताओं की लकड़ियों पर आश्रम में प्रसाद और लंगर बनता है। दूर दूर से लोग यहां अपनी अलग अलग समस्याओं के निवारण के लिए आते हैं। हजारों साल से चली आ रही यह परंपरा आज भी कायम है।

पवन कहते हैं कि काशी में अघोरी गोपनीय तरीके से रहते हैं। वे साधना के लिए कब श्मशान आते हैं और कब चले जाते हैं, कोई नहीं जानता। वे होली, दिवाली की रात और रंगभरी एकादशी को खुले तौर पर आते हैं। इन तीन दिनों में यहां वो सब देखने को मिलता है, जिसे कमजोर दिल वाले आम इंसान नहीं देख सकते। जैसे कोई अघोरी गुड़िया में सुई घोंप रहा होता है, कोई मुर्गे का सिर काटकर उसके खून से साधना करता है, तो कोई मछली जला रहा होता है। जैसा संकल्प, वैसी साधना।'

होली के गाने सुनते ही कांपने लगती हूं, भगवान... काश होली आती ही नहीं

-सर्वेश द्विवेदी

मेरा कोई अपना नहीं है। जिंदा होकर भी मुर्दे सी पड़ी रहती हूं। श्मशान जैसा घर लगता है। 12 साल हो गए, होली नहीं मनाई। होली के गाने बजते हैं, तो उसके एक-एक शब्द मेरे कानों को चीरते हैं। जिसका सुहाग उजड़ गया हो, मां-बाप नहीं हो, अपना घर नहीं हो, उसके लिए होली का क्या मतलब है। हे भगवान... काश ये होली ही नहीं आती।

मैं अन्नपूर्णा शर्मा। बनारस में पली बढ़ी। ठाट-बाट की जिंदगी जी। मेर घर के ठीक सामने मणिकर्णिका घाट और काशी विश्वनाथ मंदिर है। बिजली की तारों के जाल, खोए, पूड़ी-कचौड़ी और बनारसी साड़ियों की दुकानें।

अभी मेरे काशी का नजारा ऐसा है कि मानो सारा शहर दौड़ रहा है। जहां देखो लोग रंग खेल रहे, ढोल बजा रहे। हवा में यहां की पकवानों की खुशबू फैली है, पर मुझे यह माहौल अखरता है। होली के गाने बजते ही हाथ-पैर कांपने लगते है।

बचपन में जमकर होली खेलती थी। पिता बनारसी मिठाई के माहिर कारीगर थे। होले के कुछ दिन पहल से ही घर में खोया बनने शुरू हो जाता था। धीमी आंच पर दूध जलने की वो खुशबू मुझे आज भी रुलाती है।

मट्ठियां, गुझियां, आलू टमाटर की सब्जी-पूड़ी, पनीर की सब्जी, दही-वड़े, पापड़ और चिप्स बनते थे। नए कपड़े भी खरीदे जाते थे। क्या जमकर धमाल मचाते थे। सुबह रंग खेलते। फिर नए कपड़े में शाम में परिवार के साथ काशी विश्वनाथ मंदिर जाते। एक होली गई नहीं कि अगली होली का इंतजार शुरू हो जाता था।

वक्त बीतता रहा। 12वीं बाद घर में एक अच्छा रिश्ता आया। पापा ने मेरी शादी करा दी। पति से मुझे इतना प्यार मिला कि क्या बताऊं। मुझे गोलगप्पे और आलू चाट बहुत पसंद थी। वे मेरे लिए हर संडे मार्केट से पैक कराकर घर लाते थे।

ससुराल के लोग अच्छे नहीं थे। मुझे बात-बात पर ताने मारते थे। ठीक से खाना बनाना नहीं आता था, इस वजह से हर दिन डांट खानी पड़ती थी। इतना लंबा परिवार था कि दिन-भर काम करते-करते थक जाती थी, फिर भी लोग खुश नहीं रहते थे, लेकिन पति साथ देते थे। हर कदम पर।

पता है ससुराल वाले मुझे मायके नहीं जाने देते थे। वे कहते थे कि तुम मायके चली जाओगे तो यहां काम कौन करेगा। मैंने पति से बताया तो उन्होंने कहा कि तुम चिंता नहीं करो। कुछ करता हूं मैं। इसके बाद वे मंदिर ले जाने के बहाने, मुझे हर हफ्ते पिता से मिलवाने के लिए ले जाने लगे।

पति को पता था कि मुझे होली बहुत पसंद है। इसलिए वे होली के कुछ दिन पहले से ही रंग खेलना शुरू कर देते थे। रात को जब मैं सो जाती थी तो वे चुपके से रंग लगा देते थे। सुबह जब मैं उठती थी, तो सब मुझे देखकर हंसते थे। मुझे समझ नहीं आता था कि लोग हंसते क्यों हैं। फिर जब आइने में चेहरा देखती थी तो पता चलता था कि चेहरे पर रंग लगा है।

इसके बाद मैं भी उन्हें नहीं छोड़ती थी और रंग लगा देती थी। फिर हम साथ मिलकर पकवान बनाते थे। दोस्ते-रिश्तेदारों को खिलाते थे। इस तरह हंसते-खेलते शादी के तीन साल गुजर गए।

एक रात हम पति-पत्नी खाना खाकर सो गए। सुबह पति उठे तो अजीब सी बातें करने लगे। वे बड़बड़ाने लगे। किसी को पहचान नहीं रहे थे। ससुर उन्हें डॉक्टर के पास ले गए । डॉक्टर ने कहा कि इन्हें सरकारी अस्पताल में ले जाओ। वहां जाने पर पता चला कि रात में सोते हुए ब्रेन हैमरेज हो गया है।

अस्पताल में जब भी वे मुझे देखते तो कुछ कहने की कोशिश करते। मैं भी चाहती थी कि दो बात उनसे हो जाए। कम से कम ये तो पता चल जाए कि वे कहना क्या चाहते हैं, लेकिन वे बोल नहीं पाते थे। करीब एक साल तक उनका इलाज चला। उसके बाद उनकी मौत हो गई।

ये मेरे लिए सबसे बड़ा सेटबैक था। जिंदगी वीरान हो गई। दिन-रात रोते रहती। भगवान से बोलती थी कि इतना अच्छा पति मुझे दिया तो फिर छिना क्यों। भगवान से भरोसा उठ गया। पूजा-पाठ, त्योहार मनाना सब कुछ छोड़ दिया।

पति की मौत के 15 दिन बाद तक लोग घर में आते-जाते रहे। मेरी हिम्मत बढ़ाते रहे। उसके बाद लोगों का आना-जाना बंद हो गया। इसके बाद एक दिन सास ने कहा कि तुम मेरे बेटे को खा गई। अब यहां तुम्हारा कोई काम नहीं है। अपने पिता के घर चली जाओ।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि मैं जानती थी कि ये लोग पति के रहने पर मुझे तकलीफ देते थे, तो उनके जाने के बाद कैसे मेरा साथ देंगे। ये लोग मुझे यहां रहने नहीं देंगे। इसलिए कुछ दिन बाद मैं एक-दो जोड़ी कपड़े लेकर पिता के घर चली गई।

पिता के घर पहुंची तो उनके लिए भी मुसीबत बन गई। मेरे हालात देखकर उन्हें बहुत तकलीफ होती थी। वे छिप-छिपकर रोते रहते थे। उन्हें लगता था कि यह क्या हो गया बेटी के साथ। मेरी बेटी का अब कौन ख्याल रखेगा।

पिता चाहते थे कि मैं दूसरी शादी कर लूं। उन्होंने कई बार मुझसे कहा भी, लेकिन मैंने हर बार मना कर दिया। मेरे मन में आज तक दूसरी शादी का ख्याल आया ही नहीं। पति ने मुझे इतना-प्यार दुलार दिया था कि उसकी जगह कोई नहीं ले सकता।

उनके जाने के बाद भी मेरे दिल में उनके लिए जो जगह थी वो जस की तस थी। उस जगह पर मैं किसी और को पल भर के लिए भी नहीं रख सकती थी। इसलिए मैंने दूसरी शादी नहीं की।

मेरा हाल देखकर पिता बहुत परेशान रहते थे। धीरे-धीरे उनकी तबीयत बिगड़ती गई। वे डिप्रेशन में जाने लगे। एक साल बाद उनकी मौत हो गई। पिता के जाने के बाद मैं पूरी तरह अकेली हो गई। किराए के घर पर थी। कोई आमदनी का जरिया था नहीं। पिता भी कोई संपत्ति छोड़कर नहीं गए थे।

अपना गुजारा कैसे करूंगी, कैसे रहूंगी, कुछ समझ नहीं आ रहा था। कुछ दिन ट्यूशन पढ़ाकर काम चलाया। इसके बाद एक रिश्तेदार ने कहा कि बनारस चली जाओ। वहां बहुत सारे आश्रम है, वहां तुम्हारा गुजारा हो जाएगा। इसके बाद मैं बनारस चली आई। यहां बिड़ला विधवा आश्रम में रहने लगी। 12 साल से मैं यहां हूं। इस आश्रम में हम लोगों ने आज तक कभी होली नहीं मनाई। त्योहार पर सभी अपने कमरे में मरी हालत में रहती हैं। आखिर करना भी क्या है... किसके लिए त्योहार मनाएं। बिना अपनों के त्योहार का क्या मतलब।

यहां तो सिर्फ दीवारें हैं। कभी कोई आता-जाता नहीं है। ना मायके पक्ष के ना ससुराल पक्ष के। कभी कभार कोई दान देने वाला सीढ़ियां चढ़ के आता है, कुछ पैसे और दवाइयां दे जाता है। वरना सन्नाटा छाया रहता है।

मेरे घर के सामने ही श्मशान है। काशी का श्मशान भी श्मशान नहीं लगता है, लोग वहां उत्सव मना रहे होते हैं, लेकिन यह आश्रम श्मशान लगता है। इतना सन्नाटा है यहां। डर लगने लगता है कभी-कभी तो यहां के अकेलेपन से। घबराहट होती है।

पर क्या करें, कहां जाएं, किससे बात करें। मुझे होली के वक्त हमेशा पति की याद आती है। कभी-कभी सोचती हूं कि वे भले बीमार रहते, लेकिन मेरी आंखों के सामने रहते। कहीं से भी कमाकर उन्हें खिलाती। कम से कम विधवा तो नहीं होती। अब तो शरीर भी साथ छोड़ रहा है। एक-एक दिन बस इसलिए जी रही हूं कि एक दिन ये जिंदगी कट जाए।

दादा ने ही मेरा रेप किया:पापा से कभी मिली नहीं, मां ने 3 शादियां की; दादी कहती हैं- केस वापस ले लो बिटिया

-चुन्नीलाल प्रधान

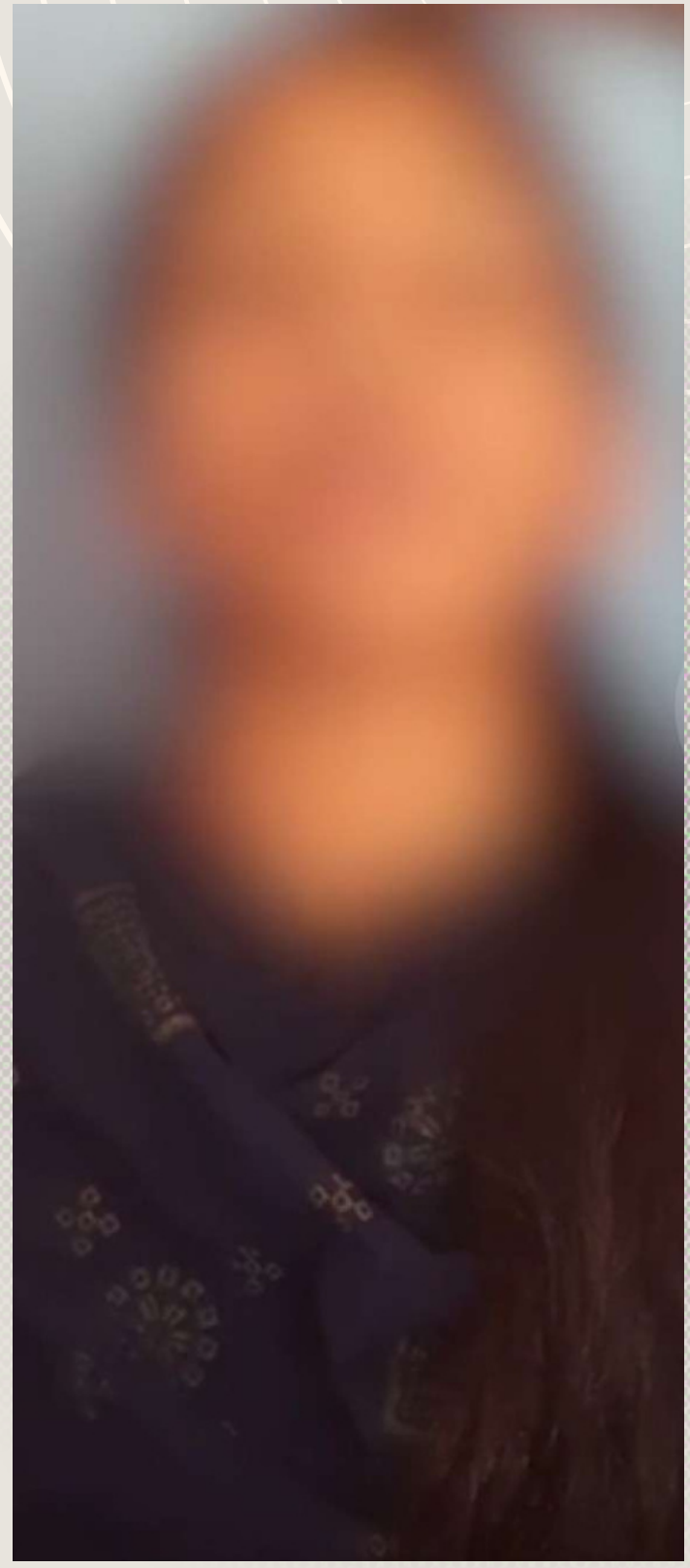

मेरा कोई अपना नहीं है। सगे पापा ने मुझे और मां को घर से निकाल दिया क्योंकि मैं बेटी पैदा हुई। तब मैंने पहला बर्थडे भी नहीं मनाया था। मां ने दूसरी शादी की। उसके पति को मैंने पापा माना, लेकिन उनके पिता ने मेरा रेप कर दिया। तब मैं महज 12 साल की थी।

मां ने तो तीसरी शादी कर ली, लेकिन मैं उसके पति को पापा नहीं मान सकी। अभी 12वीं में हूं। 6 साल से रेप विक्टिम सेंटर ही मेरा घर है।

मैं तनीषा। उत्तर प्रदेश के बहराइच में जन्मी। पापा को बेटा चाहिए था। इस वजह से मेरे पैदा होते ही वे मां को टॉर्चर करने लगे। दोनों के बीच लड़ाई-झगड़ा होने लगा। एक रात उन्होंने मां को घर से निकाल दिया। इसके बाद मां मुझे लेकर लखनऊ आ गई और एक आश्रम में रहने लगी। उस वक्त मैं 5-6 महीने की थी।

इसके बाद मां ने दूसरे शख्स से शादी कर ली। मैंने उसी शख्स को अपना पापा माना, क्योंकि बचपन से उन्हें ही पापा के रूप में देखा। तीन साल की थी तब एक भाई हुआ। फिर दो साल बाद एक बहन हुई। मैं भाई-बहनों में बड़ी थी। सबकी देखभाल करती थी।

पापा दिनभर घर से बाहर रहते थे और देर शाम घर आते थे। कुछ सालों तक ऐसे ही चलता रहा। जब मैं 10 साल की हुई तो मां ने पापा से कहा कि इसका स्कूल में दाखिला करा दीजिए। इस बात से पापा नाराज हो गए। उन्होंने मां से साफ-साफ कह दिया कि मेरे पास पैसे नहीं है।

इस बात को लेकर मां-पापा में लड़ाई होने लगी। गुस्से में मां ने पापा की साइकिल बेच दी और एक स्कूल में मेरा एडमिशन करा दिया। इसके बाद मां ने पापा से कहा कि वो नौकरी करेंगी और अपनी बेटी को पढ़ाएंगी। उन्होंने एक कंस्ट्रक्शन साइट पर काम भी ढूंढ लिया। इससे पापा और मां के बीच और ज्यादा झगड़े होने लगे। पापा का कहना था कि हमारे घर की कोई औरत बाहर काम नहीं करने गई है। तुम भी घर पर ही रहो।

मां जिस कंस्ट्रक्शन साइट पर काम करने जाती थीं, वहां एक शख्स से उनकी नजदीकियां बढ़ने लगी। मां घर में वैसे ही परेशान रहती थीं। पापा से उनकी पटती नहीं थी। एक रोज मां ने कहा कि चलो एक चाचा के घर चलना है। मैं मां के साथ चल पड़ी, बाकी भाई-बहन वहीं रह गए।

वह आदमी मेरे से अच्छे से बात करता था और मेरी देखभाल भी करता था। मां कहती थीं कि ये तुम्हारे पापा हैं, लेकिन मैं कहती थी कि मेरे पापा तो दूसरे हैं, इन्हें पापा कैसे मानूं। मां ने मुझे बहुत समझाया, डराया, धमकाया, लेकिन मैं उस आदमी को पापा नहीं बोल सकी। मैंने मां से साफ कह दिया कि आप पति बदल लोगे, लेकिन मैं पापा नहीं बदलूंगी।

इस पर वो आदमी मां से झगड़ने लगा कि अगर ये लड़की मुझे पापा नहीं बोलेगी, तो मैं तुम दोनों को घर से निकाल दूंगा।

दो महीने बाद मां दोबारा मेरे भाई-बहन वाले घर लौट आई। आते ही पापा से उनकी कहा-सुनी हुई। दादा-दादी का कहना था कि इस औरत को घर में नहीं आने दो, ये दोबारा भाग जाएगी। जैसे-तैसे करके पापा ने मां को रख तो लिया, लेकिन मुझसे बार-बार पूछते थे कि तुम दोनों कहां थे। तुम्हारी मां किसके घर रहती थी। मां ने मुझे कुछ भी बताने से मना किया था।

अब मैं चीजों को समझने लगी थी। मुझे पता चल चुका था कि ये पापा सौतेले हैं। मेरे भाई-बहन भी सौतेले हैं। असली पापा कौन हैं और कहां हैं, इसके बारे में कुछ नहीं पता। किसी ने बताया ही नहीं। मां ने बस इतना ही बताया कि उन्हें बेटी नहीं चाहिए थी। इसलिए हम अलग हो गए।

एक रोज मैंने पापा से सब कुछ सच-सच बता दिया, क्योंकि मुझे लगता था कि मां ही दोषी है। वो अगर ठीक से रहती तो इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता। इसके बाद पापा ने मां को घर से निकाल दिया। मां दोबारा उसी आदमी के पास चली गई। मैं ना तो मां के साथ गई और ना ही मां ने मुझे साथ ले जाना जरूरी समझा।

कुछ दिनों बाद पापा ने दूसरी शादी कर ली। मुझे और मेरे सौतेले भाई-बहनों को छोड़ दिया और दूसरे शहर जाकर रहने लगे। मैं भाई-बहनों के साथ दादा-दादी के साथ रहने लगी।

वहां कॉलोनी में बच्चों के लिए एक NGO काम करता था। वहां काम करने वाली दीदी ने मेरा एडमिशन एक स्कूल में करा दिया। मैं उस स्कूल में पढ़ने के लिए जाने लगी। इस तरह एक-एक दिन करके वक्त गुजरने लगा। अब मैं 12 साल की हो चुकी थी।

2015 की बात है। दादी कुछ दिनों के लिए रिश्तेदार के यहां गई थीं। वहां शादी थी। हम तीनों भाई-बहन और दादा घर पर थे। हमारे घर में एक ही कमरा था, उसी में सभी लोग सोते थे।

एक रात नींद में मुझे एहसास हुआ कि कोई मेरे साथ जबरदस्ती कर रहा है। मैं चौंक कर उठी तो देखा कि दादा मेरे बेड पर हैं। मैंने जैसी ही कुछ बोलना चाहा, उन्होंने अपने हाथ से मेरा मुंह दबा दिया। मैंने छुड़ाने की पूरी कोशिश की, तो उन्होंने पास पड़ा बैट मुझ पर दे मारा। मैं डर गई, कांपने लगी।

सुबह मैं गुमसुम थी। भाई-बहन पूछने लगे कि क्या हुआ है, लेकिन डर के मारे कुछ कह नहीं सकी। अगले दिन दादा ने रात में वैसा ही किया। मैंने विरोध किया तो खूब मारा। इसके बाद तो उनका ये रोज का काम हो गया। उन्होंने मेरा रेप करना भी शुरू कर दिया। वे जब भी मौका पाते या घर में कोई नहीं होता, मेरा रेप कर देते।

मैं घर में न किसी से कुछ बोलती थी, न ही किसी से यह सब शेयर करती थी। एक तरह से डिप्रेशन में चली गई थी। भाई-बहन दादा से कहते थे कि दीदी को कुछ हो गया है। इसका इलाज कराओ। इस पर दादा कहने लगे कि इसको कोई बीमारी नहीं है, इसके शरीर में भूत घुस गया है। इसलिए ये ऐसी हरकतें कर रही है।

इसके बाद उन्होंने मेरा स्कूल छुड़वा दिया। घर से कहीं जाने पर रोक लगा दी। कुछ दिनों बाद वो दीदी घर आईं, जिन्होंने मेरा स्कूल में एडमिशन कराया था। वे घर आकर पूछने लगीं कि स्कूल क्यों नहीं आ रही हो, क्या हुआ है। इस पर दादा गुस्सा हो गए।

उन्होंने दीदी को भला-बुरा कहा और घर से भगा दिया। दीदी शायद समझ गई थीं कि सब कुछ ठीक नहीं है। जाते-जाते उन्होंने कहा कि कुछ भी दिक्कत हो तो मुझे जरूर बताना।

धीरे-धीरे मुझे खुद से नफरत होने लगी थी। एक दिन मैंने दादी से सब कुछ बता दिया। मुझे लगा कि दादी मेरी मदद करेंगीं, लेकिन वो तो उल्टे मुझ पर ही बरस पड़ीं। कहने लगीं कि तुमने मेरे मर्द को फंसा लिया है। तुम ही दोषी हो।

एक रात दादा मेरे पास आए। नींद तो मुझे आती नहीं थी। जैसे ही वे मेरे बेड पर आए मैंने फौरन बेड से कूदकर कमरे की लाइट जला दी। दादा बिना कपड़ों के थे। दादी भी उठकर बैठ गईं। इस हाल में दादा को देखकर उन्होंने मेरे सामने दादा को खूब भला-बुरा कहा।

खैर इसका दादा पर कोई फर्क नहीं पड़ा। उस दिन के बाद से तो वे दादी के सामने भी मेरे साथ जबरदस्ती कर देते थे। डर और लोकलाज के मारे दादी भी किसी से कुछ कह नहीं पाती थीं।

एक रात दादा मेन गेट का दरवाजा लगाना भूल गए। मुझे लगा कि ये सही मौका है यहां से निकलने का। रात में ही भागकर मैं उस NGO के पास चली गई, जिसने मेरा स्कूल में एडमिशन कराया था। मैंने वहां की दीदी से सारी बातें बताई।

इसके बाद वो दीदी मुझे चाइल्ड हेल्पलाइन लेकर गईं। वहां मेरे बयान दर्ज किए गए। दादा को वहां बुलाया गया और उनसे पूछताछ हुई। वहां वे कहने लगे कि ये लड़की ही मुझसे कहती थी कि मेरे साथ ऐसा-ऐसा करो, मेरा कोई दोष नहीं है।

इसके बाद मेरा मेडिकल टेस्ट हुआ और दादा को पुलिस ने अरेस्ट कर लिया। इसके बाद उन्हें जेल भी भेज दिया गया। अभी मेरा केस उत्तर प्रदेश सरकार देख रही है।

चूंकि तब मैं नाबालिग थी। इसलिए मुझे लखनऊ के एक अनाथ आश्रम भेज दिया गया। वहां पढ़ने के लिए एक सरकारी स्कूल में दाखिला करवा दिया गया। मैं यहां पढ़ाई तो करने लगी, लेकिन पुरानी बातों को भूल नहीं पा रही थी। अंदर से घुटन महसूस होती थी। अक्सर रोती रहती थी।

कभी-कभी तो लगता था कि मैं ही कसूरवार हूं। मेरी वजह से ही मेरा परिवार बिखर गया। दादा को जेल हो गई। रिश्तेदार भी मुझे ही दोषी मानते थे।

इस तरह एक-एक करके दिन बीतते गए। मैं आठवीं क्लास में पहुंच गई। इस बीच दो बार दादी मिलने आईं। उन्होंने मुझसे कहा कि केस वापस ले लो, अपने दादा को जेल से छुड़ा लो। हम तुम्हारे पांव पड़ते हैं। जब मैं उन्हें मना कर देती तो वो मुझ पर दबाव बनाने की भी कोशिश करने लगीं। स्कूल की प्रिंसिपल को इसके बारे में पता चला। एक दिन उन्होंने मुझे बुलाया और समझाया कि मैं किसी भी तरह के दबाव में न आऊं। केस वापस न लूं। 2018 में उस अनाथ आश्रम से मुझे नवजागृति सेंटर भेज दिया गया। यहां मेरा को-एड स्कूल में दाखिला करवा दिया गया, जहां मैंने नवीं और दसवीं की पढ़ाई की।

को-एड स्कूल में पढ़ना मेरे लिए आसान नहीं था। मुझे लड़कों से घिन आती थी, डरती थी। मैं उनसे बात नहीं कर पाती थी। वहां मेरे मैथ्स के सर हुआ करते थे। उन्होंने क्लास के लड़कों को मेरे बारे में बताया और कहा कि इससे बात किया करो।

सच कहूं तो उन सर ने और क्लास के लड़कों ने मेरी काफी मदद की। उन्हीं की वजह से मैं उस सदमे से उबर सकी।

इसके बाद मैं लखनऊ के रेड बिग्रेड सेंटर में रहने लगी। यहां मुझे छोटे बच्चों के स्कूल का कोऑर्डिनेटर बना दिया गया। अभी 12वीं में हूं। अपनी पढ़ाई के साथ छोटे बच्चों को भी पढ़ाती हूं। खाना-पीना-रहना सब कुछ सेंटर मुहैया कराता है।

मुझ पर दादी और रिश्तेदारों का काफी दबाव रहता है कि दादा को माफ कर दूं, लेकिन नहीं करूंगी। आज तक मैं उस हालात से उबर नहीं पाई हूं। आज भी सपने में बुदबुदाती हूं। चिल्लाने लगती हूं। दूसरी बात ये भी कि अगर मैंने दादा को माफ कर दिया तो बाकी लड़कियों को क्या मुंह दिखाऊंगी जो इस तरह की दरिंदगी का शिकार होती हैं।

जिस पिता ने पैदा किया, वो कहां हैं नहीं पता। न मैं कभी उनसे मिली न वे मिलने आए। जिसे मैंने पापा माना, उन्हें मुझसे अब मतलब नहीं। एक बार भी उन्होंने यह पूछना जरूरी नहीं समझा कि मेरे साथ क्या हुआ है, क्यों हुआ है।

कहां जाता है कि मां के पास बेटियां सबसे ज्यादा सुरक्षित रहती हैं, लेकिन मुझे मां के पास जाने में डर लगता है। कल को उस आदमी ने भी मेरे साथ वहीं हरकतें करनी शुरू कर दीं तो मैं क्या करूंगी। ये सच है कि मैं बहुत कुछ गंवा चुकी हूं, लेकिन एक सुकून ये कि कम से कम सुरक्षित तो हूं।

अब मैं हर उस लड़की स बताना चाहती हूं कि कोई कुछ बोलता है, बेइज्जती होती है, समाज गलत बोलता है, ताने मारता है, तो उसका विरोध करो। समाज में जीने के लिए खुद को मजबूत करो।

प्यार को हो जाने दो.....

- सुमना. बी

पीला शीशों जड़ा लहंगा, लाल रंग की चोली और हरे रंग की चुनरी ओढ़े जिस पर टंके सलमे-सितारे हर तरफ अपनी रोशनी बिखेर रहे थे। खूबसूरत लहंगा-चोली पहने वह गीत के बोलों के साथ थिरक रही थी। उस समय नृत्य करते हुए कभी वह मीरा जैसी बावरी लग रही थी तो कभी राधा जैसी प्यार में डूबी, दुनिया से बेखबर।

और वह उसके परफॉर्मेंस की वीडियो रिकॉर्डिंग करते-करते जैसे अपनी सुध-बुध खोता जा रहा था। उसकी छरहरी काया के साथ बल खाता उसके शरीर का हर कटाव, चेहरे पर आने वाले भाव और पतली-पतली अंगुलियों की भंगिमा... सब उसके अंदर एक सरसराहट पैदा कर रहे थे। उसकी आंखों में न जाने क्या था कि उसे लग रहा था जैसे उनमें वह डूब रहा है। उसके पूरे व्यक्तित्व का आकर्षण उसे खींच रहा था। इससे पहले वह हजारों बार कलाकारों और अन्य लोगों की वीडियो रिकॉर्डिंग कर चुका था, पर किसी ने उसे इस तरह मोहित नहीं किया था। वह एक फोटोग्राफर था और अपनी मीडिया टीम की मेधा के साथ 'होलीत्सव' के इस प्रोग्राम को कवर करने आया था। वह उसकी लगातार फोटो भी खींच रहा था, हर एंगल से, हर भंगिमा के साथ। मानो वह उसके रूप को अपने कैमरे में कैद कर लेना चाहता हो।

मेधा ने उसे टोका भी, "कुणाल, कुछ ज्यादा ही फोटो नहीं क्लिक कर रहा है तू? छोटा-सा ही फीचर लिखना है और साथ ही हमारी साइट पर एक-दो मिनट का वीडियो अपलोड हो जाएगा। मुझे लगता है अब चलना चाहिए। बाकी फोटो बाद में आयोजक भेज ही देंगे।"

"रुक ना। जब आए हैं तो पूरा प्रोग्राम देखकर जाएंगे। फिर डिनर भी तो है।" कुणाल यह नहीं कह पाया कि वह सामने चल रहे नृत्य और नृत्य करने वाली से अपनी नजरें नहीं हटा पा रहा है। उसने शेड्यूल निकालकर ध्यान से पढ़ा। वरना शेड्यूल पढ़ने की कभी मेहनत नहीं करता था वह। बस जहां बोला जाता था, जाकर फोटो खींचकर मेधा को या संपादक को दे देता था। राजतरंगिनी उपाध्याय नाम है उसका। इसके बाद वह 'होली आई रे कन्हाई' पर भी नृत्य करने वाली थी।

"राजतरंगिनी," मन ही मन उसने नाम बुदबुदाया। जैसा नाम है, वैसी ही इसके भीतर से उठती तरंगें हैं।

"कोई प्रसिद्ध नर्तकी है क्या यह?" उसने मेधा से पूछा। वही तो सारी स्टोरीज लिखा करती थी। म्यूजिक, डांस व सांस्कृतिक कार्यक्रमों को कवर किया करती थी।"नहीं, नई लड़की है। पहली बार बड़े स्टेज पर पब्लिक के सामने परफॉर्म कर रही है। अपने गली-मोहल्ले में करती होगी। इस बार यहां चांस मिल गया। रोज ही ऐसी कितनी डांसर आती हैं और गायब हो जाती हैं,"

मेधा ने उपहास उड़ाते हुए कहा। असल में अब वह एंजॉय करने के बजाय केवल काम की तरह लेने लगी थी ऐसे कार्यक्रमों को। दिन में दो-तीन इवेंट तो उसे कवर करने ही पड़ते थे। थक जाती थी स्टोरी लिखते-लिखते।

"पर बहुत अच्छा डांस कर रही है," कुणाल को मेधा का इस तरह राजतरंगिनी के बारे में टिप्पणी करना अच्छा नहीं लगा।

"तू बैठा देखता रह। मैं तो चली। थोड़ा-बहुत प्रेस रिलीज देखकर लिख लूंगी। बाहर शामल मेरा इंतजार कर रहा है। उसी के साथ मेरी डिनर डेट है।"

कुणाल ने कोई जवाब नहीं दिया। बीच में एनाउंसर ने आकर होली के बारे में कुछ बातें कहीं। एक कवि ने होली पर अपनी कविताएं सुनाईं। उसके बाद राजतरंगिनी फिर स्टेज पर थी।

वह अपना कैमरा ले स्टेज के पास जाकर खड़ा हो गया। उसे बहुत करीब से देखना चाहता था। इस समय उसने गुलाबी रंग की लहरिया साड़ी पहनी हुई और बालों की चोटियां बनाकर उन पर गजरा लगाया हुआ था। गालों पर छाई लालिमा देख लग रहा था मानो किसी ने उसके चेहरे पर गुलाल लगा दिया हो। उसकी पायल की रुनझुन के साथ गीत और नृत्य शुरू हुआ।

स्टेज पर थालों में रखे हरे, पीले, गुलाबी, लाल रंग के गुलाल मुट्ठी में भर वह ऐसे थिरकी कि तालियों की गूंज से सारा माहौल भर गया। राजतरंगिनी के साथ लोग भी नाचने लगे, गाने लगे और 'होली है!' का शोर उठा। उसने दर्शकों की ओर गुलाल उछालना शुरू किया तो कुणाल पर भी उसकी बौछार हुई। आयोजक लोगों के पास थाल ले जाकर उन्हें गुलाल लगाते हुए होली की बधाई देने लगे।

राजतरंगिनी नाचती ही जा रही थी। खुद वह रंग-बिरंगे गुलाल से रंग गई थी। आखिर एनाउंसर ने आकर माइक पर डिनर लगने की घोषणा की तब उसका नृत्य रुका। सच में वह राधा बन गई थी, सच में वह मीरा बन गई थी जो अपने कान्हा के साथ होली खेलना चाहती थी। तभी तो नाची थी दीवानों की तरह।

और कुणाल... वह भी दीवाना बन गया था राजतरंगिनी का, उसके नाच का, उसके गुलाबी चेहरे का और उसके प्यार के रंग में डूबे भावों का। उसके प्यार का रंग तो तभी चढ़ गया था कुणाल पर जब उसने गुलाल उस पर फेंका था।

लोग वहां चल दिए जहां डिनर सर्व किया जा रहा था और कुणाल स्टेज के पीछे। वह एक फोटोग्राफर है और राजतरंगिनी का इंटरव्यू करना चाहता है, ऐसा कहने के बाद कौन उसे बैक स्टेज जाने से रोक सकता था।

राजतरंगिनी सकुचाई से खड़ी थी। पसीने की बूंदें उसके माथे पर सफेद कणों की तरह चमक रही थीं। कुणाल ने टिश्यू पेपर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "पसीना पोंछ लीजिए, वरना फोटो अच्छी नहीं आएगी।" वह गालों पर लगे गुलाल को पोंछने लगी तो कुणाल ने मना कर दिया।

"इसे लगा रहने दीजिए। होली के रंग आप पर बहुत अच्छे लग रहे हैं। देखिए, मेरे ऊपर भी आपके गुलाल के रंग बिखरे हुए हैं।" कुणाल कहना चाहता था कि मेरे दिल में आपके प्यार के रंग उतर आए हैं, पर हिम्मत न कर सका। उसे प्यार हो गया है, यह बात कैसे कहता? वह भी यहां, इस समय। हो सकता है वह नाराज हो जाए या उसे कोई छिछोरा युवक समझ जाने के लिए कह दे।

उसने बहुत सारी फोटो खींच डाली राजतरंगिनी की। फीचर के लिए जरूरत नहीं थी तब भी, यह तो वह अपने लिए खींच रहा था।

"मुझे जाना होगा।" राजतरंगिनी बोली तो कुणाल को महसूस हुआ कि उसके स्वर में भी प्यार के रंग घुले हुए हैं। न जाने कैसे तो रंगों की नदी बह रही थी उसके भीतर जिसकी लहरें कुणाल को पूरी तरह से भिगो गईं। प्यार के गुलाल की लाली को गालों पर संभाले जब वह वहां से निकला तो जान चुका था कि होली इस बार उसके लिए प्रेम के रंग और अबीर लेकर आई है। अचानक वह गुनगुनाने लगा, "मोहे रंग दो लाल।"

एक फोन कॉल ने बदली किस्मत, 'कहानीपुर जंक्शन' और 'ट्रेसिंग हनुमान' जैसे शो बनाए

-इला जोशी

मैं इला जोशी। सपनों के शहर मुंबई में बिजनेसवुमन और प्रोड्यूसर हूं। लेकिन इस पहचान से पहले मैंने कई जिम्मेदारियां सफलतापूर्वक निभाई है। एक सफल मार्केटिंग लीडर रही, फिर वीओ आर्टिस्ट बनी और अब खुद की कंपनी चला रही हूं। 'ये मैं हूं' में जानिए मेरी कहानी...

मेरे पापा उत्तराखंड के अल्मोड़ा से और मां यूपी से थीं। मेरा जन्म ननिहाल में ही हुआ। जॉब की वजह से पापा-मम्मी हरियाणा आकर बस गए। पापा पेपर प्लांट में इंजीनियर थे और मां प्राइवेट स्कूल में हिंदी टीचर। मेरी हाई स्कूल तक की पढ़ाई अंबाला जिले के कस्बा नारायणगढ़ में हुई। वो कस्बा हरियाणा में है लेकिन हिमाचल और पंजाब के भी पास था।

साल 1994 में पापा काम के सिलसिले में मिडिल ईस्ट चले गए। 16 साल वहां काम करने के बाद पापा वापस इंडिया लौटे। तब तक मां ने अकेले ही मुझे और भैया को पाला-पोसा। हाई स्कूल की पढ़ाई अंबाला में करने के बाद इंटरमीडिएट के लिए मैं बुआ के पास देहरादून चली गई। मैं पढ़ाई के साथ पब्लिक स्पीकिंग, सिंगिंग, डांसिंग, कैलीग्राफी, पोएट्री, डिबेट जैसे एक्स्ट्रा एक्टिविटीज में काफी अच्छी थी। मैं इन सबमें भाग लेती और घर से कभी किसी ने रोका नहीं।

हम दोनों भाई-बहन को बचपन से काफी एक्सपोजर मिला। घरवालों ने डिसीजन मेकिंग का भी मौका दिया, जो कि बचपन से ही हमारे व्यक्तिव का हिस्सा बनता गया। हाई स्कूल में मेरी सोशल साइंस की टीचर सुनीता रौनियाल का मुझे पर काफी असर रहा।

घर के माहौल और सुनीता मैम की वजह से ही मैं एक्स्ट्रा एक्टिविटी में अच्छी रही। फिर मैं बीएससी की पढ़ाई के लिए चंडीगढ़ चली गई। घर वाले चाहते थे कि मुझे अच्छी पढ़ाई मिले। इस वजह मुझे अलग-अलग जगह भेजते रहे। मेरे दोस्तों को लगता कि मेरे पापा की ट्रांसफर वाली जॉब है। लेकिन जब मैं उन्हें असलियत बताती तो उन्हें यकीन नहीं होता कि एक लड़की को उसके घर वाले पढ़ाई के लिए इतनी छूट दे सकते हैं। बीएससी से ग्रेजुएशन करने के दौरान मुझे समझ आ गया कि आगे साइंस नहीं पढ़ना। मुझे हमेशा से जर्नलिज्म करना था। मैं लाइफ में अपनी पसंद को लेकर दूसरों काफी अलग रही हूं।

अपने आसपास के माहौल और टीवी की वजह से जाने-अनजान मेरा झुकाव पत्रकारिता की तरफ हो गया। पब्लिक स्पीकिंग में बहुत सहज थी इसलिए मुझे लगता कि मैं इस जॉब के लिए परफेक्ट हूं। फिर मैंने एमबीए करने के फैसला किया। उस वक्त तक एमबीए लोगों के बीच पॉपुलर था। 2008 में नोएडा एमिटी यूनिवर्सिटी से एमबीए करने आ गई।

छोटे कस्बे से थोड़े बड़े शहर आना फिर उसे बड़े शहर आना मेरे लिए कभी कल्चरल शॉक जैसा नहीं रहा। मुझे लगता है कि मैं बड़े शहर के लिए ही बनी हूं। एमबीए करने के बाद एक कंटेंट कंपनी में मेरी मॉर्केटिंग एंड सेल्स की जॉब लगी। मेरा काम बैक हैंड पर प्री सेल्स टीम के लिए था। मैं प्री सेल्स में इंटरनेशनल मार्केट का काम देखती। काम के दौरान ही एक दिन मेरे मैनेजर ने कहा कि तुम अपना टैलेंट बैकहैंड पर क्यों बर्बाद कर रही हो? तुम्हें फ्रंट पर आकर काम करना चाहिए। फिर अचानक साल 2014 में मुझे मुंबई की एक प्रिंटिंग हाउस का कॉल आया। उन्हें टीम में सदर्न अफ्रीका मार्केट पर काम करने के लिए कोई चाहिए था। उन्होंने मुझसे पूछा क्या आप इंटरेस्टेड हैं? मैं ऑलरेडी इंटरनेशनल मार्केट पर काम कर रही थी। पैकेज अच्छा था। फ्रंट पर काम करने का मौका देख मैने हां बोल दिया और मुंबई चली गई। दिल्ली में जॉब के दौरान लगता था कि ज्यादा से ज्यादा पुणे, बैंगलोर या ओवरसीज चली जाऊंगी। मुंबई जाना और वहां काम करना कभी मेरे प्लान में नहीं था। जब मुंबई आई तो कोई सपना लेकर नहीं आई थी। लेकिन आज मैं कह सकती हूं कि इस शहर ने मुझे सपने देखना सिखाया।

इस शहर को यूं ही सपनों का शहर नहीं कहा जाता है। खैर, मैं मुंबई आई और प्रिंटिंग हाउस में इंटरनेशनल सेल्स पर काम काम करने लगी। चार साल सदर्न अफ्रीका पर मैंने काफी अच्छा काम किया। इंटरनेशनल मार्केट ने मुझे काफी कुछ सिखाया। मैंने अपनी कंपनी को 6 करोड़ से 50 करोड़ तक पहुंचाया।

कंपनी के लिए इतना कुछ करने के बाद रिटर्न में मुझे जो ग्रोथ चाहिए थी वो नहीं मिली। फिर मेरे मन में आया कि जब मैं दूसरे के लिए इतना कुछ कर सकती हूं फिर खुद के लिए क्यों नहीं? जैसा कि मैंने शुरू में बताया कि मेरी दिलचस्पी लिटरेचर में रही है। नौकरी के साथ मैं इसके लिए भी वक्त निकला लेती। छुट्टी वाले दिन मैं लोगों से मिलती। उस दौरान मेरी मुलाकात कथा कथन के संस्थापक जमील गुलरेज़ साहब से हुई। मैं उनके हर प्रोग्राम में जाने लगी। जमील साहब के बदौलत मैंने उर्दू ज़ुबान, अदायगी, भाव-पक्ष सीखा। साल 2008 में जो मंच मुझसे छूट गया था, उसमें मैंने उनके जरिए वापसी की।

साल 2018 में हिंदी लेखक सत्या व्यास की किताब 'चौरासी' आ रही थी। मैं और सत्या व्यास फेसबुक पर जुड़े थे। उस वक्त मैं फेसबुक पर ऑडियो लाइव करती थी। सत्या ने मेरी आवाज़ सुनी थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या तुम मेरी किताब को अपनी आवाज़ देना चाहोगी? मैंने कहा- क्यों नहीं। फिर इस तरह वॉइस ओवर की दुनिया में मेरी एंट्री हुई। मैंने वीओ आर्टिस्ट के तौर पर काफी काम किया। कई पॉडकॉस्ट किए।

मैंने 2018 के सितंबर में नौकरी छोड़ी दी। उस वक्त मेरे पास इनकम का कोई सोर्स नहीं था। फिर भी मैंने फैसला ले लिया। नौकरी छोड़ने की बात मैंने अपने घर में नहीं बताई। मुबंई जैसे शहर में बिना ऑप्शन नौकरी छोड़ना पागलपन ही लगता। पता चलने पर मेरी मां ने मुझे दो सीख दी। उन्होंने कहा कि कभी किसी के लिए फ्री में काम मत करना। दूसरा ये मत सोचना कि तुम जीरो से शुरू कर रही। तुम्हारे पास 10 साल का एक्सपीरिएंस है। 2019 में मैंने अपने एक दोस्त के साथ मिलकर कंपनी शुरू की।

मैं कंपनी में बिजनेस दिखती हूं और मेरे पार्टनर क्रिएटिव पार्ट। 2020 में हमारा पहला ऑडियो शो 'जमनापार का जासूस' देश बड़े म्यूजिकल प्लेटफॉर्म गाना के लिए आया। आज भी वो शो हाईस्ट फॉलोवर्स के साथ उस प्लेटफॉर्म पर नंबर वन है। फिर धीरे-धीरे हमने म्यूजिक वीडियो, जिंगल्स, सेलेब्स इंटरव्यू, कैंपेन सब कुछ किया। साल 2021 में हमने ऑडिबल के लिए 'कहानीपुर जंक्शन' और 'ट्रेसिंग हनुमान' दो शो बनाए। ऑडिबल के 2022 के टॉप-10 पॉडकास्ट की लिस्ट में हमारा शो है। बतौर प्रोड्यूसर मेरे लिए ये बहुच बड़ी अचीवमेंट है। तीन साल में हमारी कंपनी ने बहुत सारा काम किया। जल्द ही एक बड़े प्लेटफॉर्म के लिए हम वेब सीरीज पर काम कर रहे हैं।

प्रसंगवश:

सावधान! गरिमा को नजरंदाज कभी न करें

-टिक्कू आपचे

सब जानते हैं कि जब किसी को आप उंगली दिखाते हैं, तो आपकी ओर भी तीन उंगलियां उठी रहती हैं। इशारा भाजपा और कांग्रेस की ओर ही है। ऐसा इसलिए, क्योंकि पिछले दिनों दिल्ली एयरपोर्ट पर कांग्रेस प्रवक्ता को विमान से उतरकर गिरफ्तार करने के लिए जो हाई वोल्टेज ड्रामा किया गया, काश इस तरह की कार्रवाई पुलिस द्वारा समय-समय पर देश में होने वाली आतंकी घटनाओं पर की गई होती, तो जानमाल का जितना नुकसान आज तक देश झेल चुका है, उसमें अपेक्षित कमी आई होती।

यह ठीक है कि कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने देश के प्रधानमंत्री के नाम के साथ जानबूझकर ही सही, 'चर्चित गौतम अडानी' के नाम के साथ जोड़कर अनर्गल रूप में लिया, जो घोर निंदनीय है, लेकिन उनकी गिरफ्तारी का जो हाई वोल्टेज ड्रामा पेश किया गया, वह तो विपक्षी दल के लिए बड़ा मुद्दा बन गया। अब विपक्षी ढूंढ-ढूंढ कर भाजपा और विशेष रूप से प्रधानमंत्री की इस प्रकार की टिप्पणियों को सार्वजनिक करने में लग गए हैं जिसमें सत्तारूढ़ दल के नेताओं ने विपक्षी दलों और उनके नेताओं पर की थी।

क्या इस हाई वोल्टेज ड्रामा का मतलब सत्तारूढ़ दल द्वारा एक ऐसा आतंक विपक्षी दलों के नेताओं मन में पैदा करना था, जिससे उनमें डर पैदा हो और भविष्य में कोई ऐसा बोलने की हिमाकत न कर सके। भला हो सुप्रीम कोर्ट का, जिन्होंने कांग्रेस प्रवक्ता को अंतरिम जमानत दे दी, जिससे उन्हें कांग्रेस के रायपुर में आयोजित 85वें सम्मेलन में हिस्सा लेने का अवसर मिल सका। सुप्रीम कोर्ट से अंतरिम जमानत मिलने के बाद पवन खेड़ा कहते हैं कि 'मुझे गैर कानूनी तरीके से विमान से उतारकर गिरफ्तार किया गया। बिना एफआईआर की कॉपी और नोटिस मेरी गिरफ्तारी हुई। मुझे न्यायिक प्रक्रिया पर पूरा भरोसा है, जिसने आज मेरी रक्षा की।'

पवन खेड़ा ने पत्रकार वार्ता में कहा था कि हिंडनबर्ग-अडानी मामले पर जेपीसी गठन करने में 'नरेंद्र गौतमदास मोदी को समस्या क्या है? बाद में कहा-क्षमा करें, नरेंद्र दामोदरदास मोदी।' पवन खेड़ा की गिरफ्तारी और सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए अंतरिम जमानत के बाद सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री के उत्तर प्रदेश में एक सार्वजनिक मंच से दिए गए उस भाषण को वायरल किया जा रहा है, जिसमें उन्होंने राहुल गांधी के लिए कहा था, 'आपके पिता को आपके रागदरबारियों ने 'मिस्टर क्लीन' बना दिया था। गाजे-बाजे के साथ 'मिस्टर क्लीन, मिस्टर क्लीन' चला था, लेकिन देखते-ही-देखते भ्रष्टाचारी नंबर वन के रूप में उनका जीवनकाल समाप्त हो गया।'

दरअसल, प्रधानमंत्री की यह टिप्पणी उस बोफोर्स घोटाले के संदर्भ में की गई थी जिसमें राजीव गांधी का नाम घसीटा जरूर गया था, लेकिन बाद में न सिर्फ उनका नाम उस चार्जशीट से हटाया गया और उन्हें क्लीन चिट दी गई, बल्कि एक वर्ष पहले जब सीबीआई ने सुप्रीम कोर्ट में दोबारा उस मामले को खोलने की अनुमति मांगी, तो सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई को यह कहते हुए अनुमति नहीं दी कि उसे इस मामले की याद अचानक 13 वर्ष बाद कैसे आई!

कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत कहती हैं कि जब प्रधानमंत्री हमारी चुनी हुई अध्यक्ष को कांग्रेस की विधवा, जर्सी गाय, हमारे लीडर को हाईब्रीड बछड़ा, ब्याहता को पचास करोड़ की गर्लफ्रेंड कहते हैं, तो हमें भी पीड़ा होती है। प. बंगाल के चुनाव में वहां की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर तंज कसते हुए प्रधानमंत्री 'दीदी ओ दीदी' कहते हैं, तो यह उनकी गरिमा के अनुकूल नहीं है और यह भारतीय नारी का अपमान भी है।

विरासत

उपेक्षा से जूझ रही राजा देवी बख्श सिंह की निशानी

राजा बखानौं मैं गोंडा के देवीबख्श महाराज रहे, असी चार चौरासी कोस मां जेहके डंका बाजि रहे...

- दुर्गा प्रसाद शुक्ला

ऊपर की लाइनें गोंडा नरेश राजा देवी बख्श सिंह की शौर्यगाथा का बखान करने के लिए काफी है। उन्होंने अंग्रेजों से सीधी लड़ाई लड़ी। ब्रिटिश हुकूमत के आगे न तो उन्होंने समर्पण किया न ही हार मानी। राजा से जुड़े स्थल आज भी उपेक्षा का शिकार है। 1857 वीं की क्रांति के महानायक महाराजा देवी बख्श सिंह की कोट बनकसिया, राजगढ़ व जिगना में थी। उनका पूरा परिवार जिगना कोट में ही रहता था। राजा को मल्लयुद्ध, घुड़सवारी, तैराकी में दक्षता हासिल थी। लखनऊ में नवाब वाजिद अली शाह के सामने राजा ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया था। ब्रिटिश हुकूमत ने राजा को कई प्रस्ताव भेजे लेकिन, उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। नवाबगंज के पास लगती लोलपुर का ऐतिहासिक मैदान महाराजा देवी बख्श सिंह के आन-बान व शान का जीता जागता सबूत है। जब उन्होंने अंग्रेजों की गुलामी नही स्वीकारी तो अंग्रेज हुकूमत ने उन्हें कमजोर करने के लिए पड़ोसी राजाओं को बढ़ावा देना शुरू कर दिया। उन्हीं के उकसाने पर राजा देवी बख्श सिंह के राज्य पर हमला भी किया गया। कानपुर से लेकर नेपाल सीमा तक कड़ी टक्कर देने वाली राजा की सेना ने इस बार भी उतनी ही वीरता से मुकाबला किया। बहादुर सेना को सात दिनों तक भूखे रहकर युद्ध करना पड़ा। गोंडा नरेश ने अंग्रेजों के सामने घुटने नही टेके और अपने वफादार सैनिकों को लेकर नेपाल चले गए। अवध का सबसे अंतिम जिला गोंड़ा ही है, जिस पर सबसे अंत में अंग्रेजों ने कब्जा पाया। धानेपुर से 20 किलोमीटर दूर मुजेहना ब्लाक में स्थित जिगना बाजार में उनका पैतृक महल खंडहर के रूप में आज भी है।

बुजुर्ग बताते हैं कि महल में एक लाख ताख बने थे,जिस पर दीपावली के दिन दिये जलाये जाते थे। आज यह उपेक्षा का शिकार है। भवन जर्जर हो चुका है। दीवारों पर जंगली घासें उगी हैं। जिगना बाजार में मंदिर व महल अपनी पहचान खोते जा रहे हैं लेकिन, प्रशासन इस ओर ध्यान नही दे रहा है। राजा देवी बख्श से जुड़ी स्मृतियों को संजोने का प्रयास कर रहे धर्मवीर आर्य का कहना है कि कई बार अधिकारियों को पत्र लिखा गया लेकिन, हालात जस के तस बने हुए हैं।

ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ जब पूरे देश में विद्रोह की चिंगारी फूट रही थी, तभी गोंडा व उससे सटे लखनऊ में भी विद्रोह की ज्वाला धधकने लगी थी। लखनऊ की बेगम हजरत महल अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए अवध क्रांति का नेतृत्व कर रही थीं। उन्होंने मदद के लिए गोंडा के महाराजा देवी बक्स सिंह को पत्र भेजा जिस पर गोंडा के महाराजा ने लखनऊ की बेगम की मदद करने घाघरा पार पहुंचे थे।

5 जुलाई 1857 को बेगम की शाही सेना के कैप्टन गजाधर पांडेय अनुरोध पत्र लेकर राजा के पास आए थे। यह पत्र बहुत ही मार्मिक था। जिसमें उन्होंने अंग्रेजों द्वारा अन्याय पूर्वक छीने गए राज्य, अवध के अवयस्क उत्तराधिकारी व बेघर की गई एक महिला को उसका हक दिलाने के लिए अन्यायी के विरुद्ध कमान संभालने का आग्रह किया था। जिस पर यहां से गोंडा के राजा ने अपनी सेना के साथ पहुंचकर उनका साथ दिया।

राजा देवी बख्श सिंह गोंडा-बहराइच के प्रधान नाजिम तो थे ही उन्हें बस्ती और बाराबंकी के भी आठ रजवाड़ों को मिलाकर कुल 30 रजवाड़ों के नायक के रूप में क्रांति का संचालन संभालने की जिम्मेदारी दी गई थी। फरवरी 1856 में ब्रिटिश राज्य में अवध का विलय करने के बाद जब कर्नल ब्वायलू यहां पर तैनात होकर आए तो उन्होंने राजा देवी बख्श सिंह के पास मिलने के लिए बुलावा भेजा किंतु वे आने को तैयार नहीं हुए। ब्रिटिश अमलदारी में हुए सरसरी बंदोबस्त में गोंडा के राजा के 400 गांवों में से तीस गांव कम कर दिए गए थे।

बेगम हजरत महल के आमंत्रण पर गोंडा के राजा अपनी सेना के साथ लखनऊ गए थे। जिसमें करीब तीन हजार सैनिक थे। वहां पर पहुंचकर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ जमकर लड़ाई लड़ी। यहां पर अंग्रेजों से हुए कई मुकाबलों के बाद 16 मार्च 1958 को बेगम ने चौलक्खी कोठी छोड़ दी। इसके बाद वह जहां भी ठहरीं, अंग्रेजों ने वहां पर उनका पीछा किया।

तब बलरामपुर का क्षेत्र भी गोंडा का हिस्सा था और इसका विस्तार नेपाल तक था। अंग्रेजी शासन के खिलाफ बिगुल फूंकने वाले विसेन वंश के अंतिम शासक महाराजा देवी बख्श सिंह की शौर्य गाथा आज भी लोगों में देश भक्ति का जज्बा पैदा कर रही है। विसेन राजाओं द्वारा बनाए गए राधाकुंड, सागर तालाब, मथुरा वृंदावन के तर्ज पर गोर्वधन पर्वत आज भी इस वंश के वैभवशाली अतीत की गवाही दे रहे हैं।

सेना के साथ भिड़ने निकल पड़ते थे पंचगांव के लड़ाके

महाराजा देवी बक्स सिंह के देशभक्ति के जुनून से प्रभावित होकर शहर से सटे पांच गांवों के युवा दुश्मन से लोहा लेने महाराजा की सेना के साथ निकल लेते थे। शहर से सटे केशवपुर पहड़वा, दत्तनगर विसेन, रुद्रपुरविसेन, जगदीशपुर तथा इमरती विसेन के लड़ाके युवा महाराजा देवी बक्स सिंह की सेना के साथ दुश्मन से लोहा लेने निकल पड़ते थे। माना जाता है कि बेगम हजरत महल की मदद के लिए जब महाराज लखनऊ कूच कर रहे थे तो उनके साथ इन पांच गांवों के सैकड़ों लड़ाके भी निकल पड़े थे।

इन रणबांकुरो ने भी आंदोलन में डाली थी आहुतियां

गोंडा के गांधी कहे जाने वाले बाबू ईश्वर शरण, लाल बिहारी टंडन, अयोध्या प्रसाद, अर्जुन प्रसाद, अवधराज सिंह, सोहरत सिंह, सकटू, हर प्रसाद श्रीवास्तव, अयोध्या हलवाई, ओम प्रकाश, काली प्रसाद, गया प्रसाद आजाद, गल्लू सिंह, गुरु प्रसाद, गोपीनाथ तिवारी, गौरी शंकर, चंद्रभान शरण सिंह, नंदलाल, नानक प्रसाद वर्मा, बद्री प्रसाद, बदली सिंह, बाबूराम तिवारी, वृक्षराज पांडेय, बृजनंदन ब्रह्मचारी, भगवती प्रसाद पांडेय, भभूति, महादेव मिश्र, माता प्रसाद, रखेले, रमाकांत शुक्ल, राजाराम सिंह, राम उजागर मिश्र, रामनरेश तिवारी, रामनिहोर तिवारी, राम प्यारे, रामफल, रामफेर मिश्र, राममिलन शुक्ल, यज्ञराम तिवारी, श्रीराम सिंह, श्रीराम, संत बहादुर, सूरज नारायण शुक्ल, सूरज सिंह सहित तमाम युवाओं ने देश की आजादी में अपना सक्रिय योगदान दिया।

गोंडा का प्राचीन इतिहास

पुरातन काल से अब तक चर्चित श्रावस्ती राज्य ही गोंडा का इतिहास है। इसके वर्तमान भूभाग पर प्राचीन काल में श्रावस्ती राज्य और कोशल महाजनपद फैला था। गौतम बुद्ध के समय इसे एक नयी पहचान मिली। जैन ग्रंथों के अनुसार श्रावस्ती उनके तीसरे तीर्थंकर सम्भवनाथ और आठवें तीर्थंकर चंद्र प्रभनाथ की जन्मस्थली भी है। वायु पुराण और रामायण के उत्तरकाण्ड के अनुसार श्रावस्ती उत्तरी कोशल की राजधानी थी।

1857 में गोंडा जिले में चार तहसीलें, गोंडा सदर, तरबगंज, बलरामपुर और उतरौला शामिल थी, लेकिन 1868 में प्रथम बंदोबस्त में बलरामपुर तहसील खत्म करके उसे उतरौला में शामिल किया गया। जिला बनने के 141 साल बाद 25 मई 1997 को गोंडा को दो भागों में विभाजित किया गया और नवसृजित बलरामपुर जनपद में तत्कालीन गोंडा की बलरामपुर, उतरौला और तुलसीपुर तहसील को शामिल किया गया। विभाजन के बाद वर्तमान गोंडा जनपद देवी पाटन मण्डल का मुख्यालय है। अब जनपद में गोंडा सदर, मनकापुर, कर्नलगंज एवं तरबगंज आदि चार तहसीलें हैं।

मध्यकाल में यह मुगल शासन के दौरान अवध सुबाह की बहराइच सरकार का एक हिस्सा था। फरवरी 1856 में अवध प्रान्त के नियंत्रण में आने के बाद बहराइच कमिश्नरी से गोंडा को अलग करके जिले का दर्जा प्रदान किया गया। सन 1857 की सशस्त्र क्रान्ति विफल होने के बाद जब यह ब्रिटिश सरकार के अधीन हुआ तो गोंडा नगर में जनपद मुख्यालय और सकरौरा (कर्नलगंज) में सैन्य कमान बनाया गया।

विसेन राजा मान सिंह ने बसाया गोंडा नगर

विसेन वंश के प्रतापी राजा मान सिंह ने वर्तमान गोंडा शहर बसाया था। तब टेढ़ी (कुटिला) नदी के निकट स्थित कोडसा (खोरहंसा) से राज्य का संचालन होता था। सन 1540 ई. के प्रलयंकारी बाढ़ में जब कलहंस क्षत्रिय राजा अचल नरायन सिंह के वंशजों समेत राजमहल जलमग्न हुआ तो विसेन राजा प्रताप मल्ल ने बागडोर संभाली और खोरहंसा को राजधानी बनाया।

कहा जाता है कि राजा मान सिंह शिकार की तलाश में भ्रमण करते हुए उस स्थान पर पहुंचे जहां आज गोंडा शहर है। तब यह क्षेत्र बेल, बबूल के वृक्षों से आच्छादित घना जंगल में राजा को एक खरहा (खरगोश) दिखा, जिसे शिकारी कुत्तों ने दौड़ा लिया। लेकिन उस खरहे ने उलटे कुत्तों पर ही वार कर दिया, जिससे कुत्ते विचलित हुए और वह भागकर जान बचाने में सफल रहा। इससे प्रभावित राजा ने सोचा कि जहां के खरहे इतना निडर हों उस स्थान अवश्य कुछ खास है।

उन्होंने वहीं राजधानी बनाने का निश्चय किया। इसके बाद सन 1620 ई. में राजा मान सिंह ने अयोध्या के राजा दिलीप द्वारा काली भवानी मंदिर और राजा दशरथ द्वारा स्थापित दु:खहरण नाथ मंदिर के निकट गोंडा नगर की स्थापना कर उसे राजधानी बनाया।

राजवंश ने कराया 36 शिवालयों, मंदिरों का निर्माण

धर्म के प्रति पूर्ण आस्था और श्रद्धा से ओत प्रोत विसेन राजवंश के राजाओं ने समय समय पर अनेक मठ मंदिरों का निर्माण कराया और उनके प्रबंधन की भी व्यवस्था की। राजा गुमान सिंह ने ही पृथ्वीनाथ में भगवान शिव के सात खंडों वाले अद्वितीय शिवलिंग को भव्य मंदिर में स्थापित कराया। राजा देवी बख्श सिंह भगवान शिव और आदि माता के उपासक थे। उन्होंने तीन दर्जन भव्य शिव मंदिरों का निर्माण और जीर्णोद्धार कराया था और उनके प्रबंध हेतु जमीन भी दिया था। जिगना कोट के करीब राजगढ़ में बनवाया गया विशाल पंचमुखी शिव मंदिर आज भी अपने भव्यता की गवाही दे रहा है।

गोंडा नगर के समीप खैर के जंगलों में मां भवानी के भव्य मंदिर का निर्माण, जिसे आज मां खैरा भवानी के नाम से जाना जाता है। बाराबंकी जिले के महादेवा गांव में भी उन्होंने एक विशाल शिव मंदिर बनवाया था। मशहूर लेखक अमृत लाल नागर ने 'गदर के फूल' में लिखा है कि राजा देवी बख्श सिंह ने मंदिर के अंदर पत्थर लगवाकर भव्यता दी और मंदिर के नाम पर पांच सौ बीघा भूमि दान किया था।

मन मोहक था जगमोहन महल, वृंदावन

महाराजा दत्त सिंह द्वारा निर्मित जग मोहन महल अत्यंत विशाल और दर्शनीय था। इसी जग मोहन महल के एक भाग में आज महाराजा देवी बख्श सिंह स्मारक कांग्रेस भवन और उनकी प्रतिमा के साथ स्थापित स्मारक स्थित है।

धार्मिक प्रवृत्ति के राजा उदवत सिंह की मथुरा के वृंदावन के प्रति आसक्तता को देखते हुए उनकी रानी ने सागर तालाब के बीचों बीच एक टापू पर वृंदावन के तर्ज पर गोर्वधन पर्वत, कृष्ण कुंज, बरसाना, श्याम सदन तथा नगर के बीच राधाकुंड सरोवर और कृष्ण कुंज मंदिर बनवाया। यहां स्नान के बाद राज परिवार के लोग अंदर बनी सुरंग के रास्ते सगरा तालाब के बीच टापू पर बने गोवर्धन मंदिर में पूजन अर्चन के लिए जाया करते थे। समय के थपेड़ों के साथ तालाब का स्वरूप भी बदल गया और मंदिर झाड़ियों से घिर गया। राजा देवी बख्श सिंह ने गोंडा के पूर्व में जिगना में एक मजबूत किले का निर्माण किया, वहीं से राज्य सम्पत्ति में वृद्धि की और 80 कोस तक राज्य का विस्तार किया।

राम जन्मभूमि के प्रथम आन्दोलन का नेतृत्व

अयोध्या में भगवान श्रीराम के जन्मभूमि और राम मंदिर को लेकर प्रथम बार साल 1853 में सबसे बड़े संग्राम की अगुआई राजा महाराज देवी बख्श सिंह ने ही की थी। इसमें अवध के लगभग सभी हिन्दू राजा उनके साथ थे। जन्मभूमि के इतिहास का यह सबसे बड़ा और प्रथम साम्प्रदायिक युद्ध था और सात दिनों तक चले इस संग्राम में मुगलों को पीछे हटना पड़ा। जन्मभूमि वाला स्थान पुनः हिन्दुओं के कब्जे में आ गया और अस्थाई मंदिर बना दिया गया।

महाराजा को मिले सम्मान, यादगार हो सुरक्षित

विसेन वंशज और राजा देबी बख्श सिंह साहित्य एवं संस्कृति जागरण समिति के अध्यक्ष माधवराज सिंह कहते हैं कि महाराजा देवी बख्श सिंह ने देश की आजादी के लिए अपना साम्राज्य कुर्बान कर दिया। लेकिन आजाद भारत में उन्हें सम्मान नहीं मिला। माधवराज सिंह की मांग है कि आजादी के बाद 1957 में जारी चित्रमाला के अनुसार, स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम क्रान्ति के अग्रिम पंक्ति के आठ क्रान्तिकारियों मंगल पाण्डेय, बहादुर शाह जफर, नाना साहब, लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे, कुंवर सिंह और बेगम हजरत महल के साथ महान सेनानी राजा देवी बख्श सिंह का भी नाम शामिल हो और विसेन राजवंश द्वारा स्थापित भवनों, वृंदावन, सागर तालाब और उनके जिगना कोट स्थित राजमहल के ध्वंशावशेष का संरक्षण हो ताकि आने वाली पीढ़ी महाराजा के त्याग, बलिदान, न्याय और जनप्रियता के बारे में जान सके।

कश्मीर से हिन्दुओं का एक निवेदन पत्र

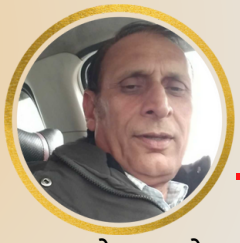

-केवल कृष्ण पनगोत्रा

कुछ रोज पहले कश्मीरी पंडित संजय की टारगेट किलिंग ने एक बार फिर दिखा दिया कि जम्मू-कश्मीर में सबकुछ ठीक नहीं है. इस दुखद घटना को अपवाद की तरह नहीं देखा जा सकता.

पांच अगस्त 2019 को जब जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन विधेयक भारत की संसद में पारित हुआ तो जम्मू सूबा के साथ कश्मीर के हिन्दू , खासकर विस्थापित कश्मीरी पंडितों ने इसका पुरजोश स्वागत किया. पहली नजर में इस उम्मीद के साथ कि भारत में अब धारा 370 के रहते कश्मीर केंद्रित सियासत से मुक्ति मिलेगी. दूसरे 1990 में घाटी से धार्मिक नफरत के वातावरण में कश्मीर से विस्थापित पंडित समुदाय को उम्मीद बंधी थी कि अब वे घाटी में सुरक्षित और सम्मानजनक घर वापसी करेंगे. लेकिन 370 की समाप्ति के तीन वर्ष बाद भी विस्थापित पंडित समुदाय पहले से कहीं ज्यादा निराश है. इस तथ्य का साक्षात्कार 'नील नाग' नाम से एक निर्वासित कश्मीरी पंडित के फेसबुक अकाउंट में भेजे गए एक निवेदन पत्र से हो जाता है जो हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री मा. नरेंद्र मोदी जी और जम्मू-कश्मीर के एलजी मा. मनोज सिन्हा को लिखा है. ई मेल से प्रेषित और सोशल मीडिया (फेसबुक) से प्रसारित इस निवेदन पत्र की एक प्रति समस्त कश्मीरी हिंदू अथवा भारतीय समाज के नाम की गई है.

इसका उद्देश्य कश्मीरी हिन्दुओं के साथ भारतीय समाज को इस बात का आभास दिलाना है कि धारा 370 की समाप्ति के तीन साल बाद भी सरकारी दावों के विपरीत इस केंद्र शासित प्रदेश में आतंकवाद ज्यों का त्यों जारी है.

बहुत ही श्रेष्ठ और कांतिपूर्ण लेखन शैली में लिखे इस निवेदन को मैं भी समस्त भारतीय समाज के अवलोकन एवं गहन विमर्श के लिए अक्षरशः प्रस्तुत कर रहा हूँ :

(एक निवेदन पत्र)

माननीय श्री NARENDRA MODI जी

और श्रीमान MANOJ SINHA जी

नमस्कार

"आज समस्त कश्मीरी हिंदू समाज BJP से क्रोधित और आक्रोशित है। क्या कारण हैं, आप भली भाँति जानते हैं, क्योंकि प्रजा के सुख-दुःख का बोध एक राजा को होना ही चाहिए, लेकिन चलिए मोहोदय मैं पुनः एक बार दोहरा देता हुँ।

PM Employment Package के चलते कश्मीरी पंडित कर्मचारियों को कश्मीर घाटी में उनके धर्म के आधार पर Genocidal Targeted killings का शिकार वर्तमान में भी बनाया जा रहा है और जब वह अपने प्राणो की रक्षा हेतु आपकी शरणागति मे घाटी से बाहर किसी अनय स्थान पर या जम्मु में Relocation की गुहार लगा रहें हैं तो उनहे इसके विपरीत वापस घाटी में ही जाकर मरने की प्रेरणा और प्रोत्साहन भी आप ही का राजतंत्र दे रहा है और अगर वो मारने के लिए तैयार नहीं होते है, तो उनका वेतन पिछले आठ माह से बंद करने का साहस भी केवल आप ही की सरकार के द्वारा किया जा रहा हैं। मैं किन शब्दों से अपने संपूर्ण समाज की ओर से आपका धन्यवाद करूँ। धारा 370 के हटाए जाने के बाद यह दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कार्य हुवा है, जम्मु व कश्मीर मे कश्मीरी हिन्दु (पंडित) समाज का श्राप लेकर भाजपा आगे अग्रसर नहीं हो पायेगी, चाहे आप जितने मर्ज़ी चुनाव जीत लें। राहुल भट्ट की निर्मम हत्या के बाद भी आपकी कश्मीरी पंडित Policy पर कोई प्रभाव नहीं दिखा। 700 वर्षों के निरंतर GENOCIDE के बाद भी आपके ही शासन में कश्मीरी पंडितों को Targeted Killings का शिकार आज भी बनाया जा रहा है। क्या आपने TRF जैसे आतंकवादी संगठनो की खुली धमकी और HITLIST जारी करनी की परम्परा भी नहीं देखी और पिछले लगभग 300 दिनो से हमारे समाज के कर्मचारी प्रदर्शन, आंदोलन और police के डंडे खा रहें है, क्या यह हमारे धर्म और देश के प्रति निष्ठा और प्रेम को पुरस्कृत किया जा रहा है।

इसलिए माननीय प्रधानमंत्री जी और उप राज्यपाल जी आप से सविनय निवेदन है कि कृपया

1. कश्मीरी पंडितों को कश्मीर घाटी से बाहर RELOCATE किया जाए।
2. MahaShivRatri के पावन पर्व पर उनका आठ माह से रुका हुवा वेतन जारी किया जाए।
3. कश्मीरी हिन्दु GENOCIDE को PK Genocide Bill 2020 के माध्यम और सौजन्य से संसद में पारित करके औपचारिक तोर और रूप से मान्यता दी जाए।
4. कश्मीर घाटी से निर्वासित दस लाख से ज़्यादा कश्मीरी हिन्दुवो के लिए एक अलग केंद्रीय शासित प्रदेश जिसे हम 'पनुन कश्मीर' कहते है, उसका निर्माण हो।
5. PM आर्थिक package को समस्त समुदाय के पुनर्वास का package न कहा जाए।

आशा है कि समस्त कश्मीरी हिन्दु समाज को पुनः ऐसे यशस्वी प्रधान मंत्री पर गर्व और गौरव करने का सौभाग्य अवश्य प्राप्त होगा।

वो गांव जहां प्रह्लाद को लेकर जली थीं होलिका, आज भी मौजूद हैं पौराणिक साक्ष्य, देखिए तस्वीरें

-ठाकुर धर्म सिंह ब्रजवासी

झांसी जिले के एरच कस्बे को होली की उद्गम स्थली माना जाता है। इस स्थान पर कई ऐसे खंडहर मौजूद हैं, जिन्हें हिरण्यकश्यप के महल का अवशेष बताया जाता है। इसी महल के पास हिरण्यकश्यप की बहन होलिका भक्त प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर आग में बैठी थीं और जल गई थीं। झांसी जिले के गजेटियर में इस बात का उल्लेख है कि एरच कस्बा एक ऐतिहासिक नगर है जहां से होली की शुरुआत हुई थी।

ऐसी मान्यता है कि एरच कस्बे के पास स्थित बेतवा नदी के किनारे बसे डिकोली गांव में स्थित पर्वत से भक्त प्रहलाद को नदी में फेंका गया था और इस स्थान को वर्तमान समय में प्रह्लाद कुंड के नाम से जाना जाता है। प्राचीन खंडहर जिसे हिरण्यकश्यप के महल का हिस्सा बताया जाता है।

डिकौली गांव का वह स्थान जहां से प्रहलाद को फेंका गया था। मान्यता के मुताबिक यहीं से भक्त प्रहलाद को फेंका गया था।

हनुमान गढ़ी मंदिर में स्थित होलिका-प्रहलाद की मूर्ति, माना जाता है कि होलिका यहीं जली थी।

डिकौली गांव का वह स्थान जहां से प्रहलाद को नदी में फेंक दिया गया था।

एरच कस्बे में स्थित नरसिंह भगवान का मंदिर।

खुदकशी के मामलों में भारत के शीर्ष पांच राज्यों के बीच मध्य प्रदेश इकलौता हिंदीभाषी राज्य

-अंजनी कुमार त्रिपाठी

छह साल पहले देश में लागू की गई नोटबंदी को सुप्रीम कोर्ट ने जायज ठहरा दिया है। उसके बाद लागू किए गए जीएसटी पर भी अब कोई वैधानिक सवाल नहीं हैं। दो साल तक कोरोना महामारी के नाम पर लगाया गया लॉकडाउन भी जनता के जीवन के लिए जरूरी बताया गया। इन सबके बावजूद जीवन नहीं बच रहा। आत्महत्या की फसल अब शहरी फ्लैटों में लहलहा रही है। आखिर क्यों?

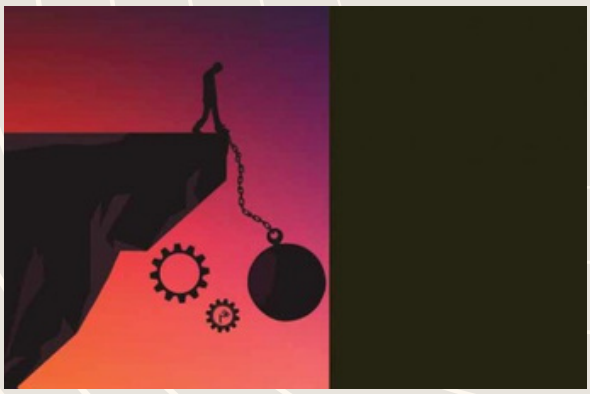

किस्मत के मारेः सामूहिक खुदकशी के बाद बच गए किशोर जाटव (ऊपर) और परिवार

बुधवार, 11 जनवरी की सुबह भोपाल में किशोर जाटव ने अपनी पत्नी और चार बच्चों के साथ जहर खा लिया। उसी शाम इंदौर के राहुल वर्मा ने क्षिप्रा नदी में कूद कर अपनी जान दे दी। इन दो आत्महत्याओं के बीच राज्य में ग्लोबल निवेशक सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें दुनिया भर से आए उद्योगपतियों, निवेशकों और राजनयिकों का अभिनंदन करते हुए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा, 'हम साथ मिलकर मध्य प्रदेश के विकास का नया अध्याय लिखेंगे।' इस निवेशक सम्मेलन के चक्कर में जबरन उजाड़ दी गई अपनी दुकान को जब राहुल वर्मा शहर में दोबारा कहीं और नहीं बसा सके, तब मजबूर होकर बुधवार की शाम उन्होंने पत्नी को फोन करके और भाई को वीडियो भेज कर कहा कि पैसे की तंगी उनसे और नहीं झेली जा रही है, वे मरने जा रहे हैं। इसी तरह, भोपाल के बैरागढ़ कलां में ठेकेदारी करने वाले किशोर जाटव ने भी जहर खाने के तुरंत बाद अपने भतीजे को एसएमएस से अंतिम बार राम-राम कहा था, पर वे बच गए। उनकी सबसे छोटी बच्ची की मौत हो गई। मदद के लिए अगले दिन दोपहर हमीदिया अस्पताल पहुंचे जाटव समाज के एक प्रतिनिधि ने आउटलुक को बताया, 'वो एकदम चुप है, कुछ बोल नहीं रहा। किसी नेता का काम किया था उसने, उसी से लेनदेन का मामला था और तंगी में चल रहा था। हो सकता है पॉलिटिकल दबाव हो।'

मध्य प्रदेश में लिखे जा रहे 'विकास' के 'नए अध्याय' का हिस्सा वर्मा अब कभी नहीं बन पाएंगे। खुशकिस्मती से बच गए जाटव भी अपनी बच्ची की त्रासद याद में पुराने अध्याय से आजीवन मुक्त नहीं हो पाएंगे। काम-धंधे में तंगी और घाटे के मारे ये दोनों शख्स बीते पांच साल के दौरान राज्य के खाते में जुड़े उस नए अध्याय की पैदाइश हैं जिसे मुख्यमंत्री भले विकास न मानें, पर वह विकास का सगा जरूर है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट के अनुसार खुदकशी के मामलों में भारत के शीर्ष पांच राज्यों के बीच मध्य प्रदेश इकलौता हिंदीभाषी राज्य है जो 2017 से 2019 तक चौथे स्थान पर रहने के बाद 2020 में एक पायदान ऊपर चढ़कर अब तक लगातार तीसरे स्थान पर कायम है। यह कहानी हालांकि अकेले मध्य प्रदेश की नहीं है, लेकिन शीर्ष पांच खुदकशी वाले राज्यों में उसका होना इस बात का संकेत अवश्य है कि एक परिघटना के रूप में खुदकशी, जो लंबे समय से तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र जैसे विकसित राज्यों तक सीमित थी, अब हिंदी पट्टी में पहुंच चुकी है।

यह बदलाव केवल इलाकावार नहीं है, पेशावार भी है, जो ज्यादा चौंकाने वाला है। अब किसानों के मुकाबले कारोबार और व्यापार से जुड़े लोग ज्यादा आत्महत्या कर रहे हैं। 2020 और 2021 के एनसीआरबी के आंकड़ों में किसानों के मुकाबले कारोबारियों ने ज्यादा खुदकशी की है। 2021 में कुल 12,055 कारोबारियों ने अपनी जान ले ली। यह आंकड़ा 2020 में 11,716 था। दोनों साल किसानों की आत्महत्या के मामले कारोबारियों से कम देखने में आए। 2021 में स्वरोजगार करने वाले उद्यमियों की आत्महत्या के मामलों में 2018 के मुकाबले 54 फीसदी की वृद्धि दर्ज हुई है। होना तो यह था कि 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत', 'ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस' और 'स्टार्ट-अप इंडिया' जैसी मुहिमों से सहूलियत बढ़ती, मगर संकट शायद गहरा होता गया है।

जिंदगी से हारे हुए

मौतों की यह ताजा फसल पवन वर्मा के उस 'महान भारतीय मध्यवर्ग' की जमीन पर फल रही है जो इस देश में आज से तीस साल पहले बड़े धूमधाम से लाए गए उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की पैदाइश है। इसी मध्यवर्ग के लिए बीते तीन दशक में सारी नीतियां बनती रही हैं। इसी के नाम पर राजनीतिक नारे लगाए जाते रहे हैं। इसी मध्यवर्ग की संस्कृति को मीडिया लगातार प्रोत्साहित करता रहा है। पूरा बाजार इसी वर्ग के उपभोग पर टिका है। इसी मध्यवर्ग ने भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन करके केंद्र और राज्यों में सरकारें बदलीं। इसी मध्यवर्ग को अच्छे दिन के सपने दिखाए गए।

इसी मध्यवर्ग ने नोटबंदी से लगे झटके के बाद भी उम्मीद नहीं हारी, बल्कि उसके आलोचकों को पलट कर कोसता रहा और चुनावों में सत्ताधारी दल को ही जितवाया। एनसीआरबी की मानें तो यही मध्यवर्ग कोरोना और लॉकडाउन की मार से एकदम से टूट गया, कर्ज में डूब गया, अकेला पड़ गया। अलगाव में पड़ा आदमी जब खुदकशी करने उतरा, तो अकेला नहीं गया। पूरे के पूरे परिवार एक झटके में खत्म हो गए। दिल्ली से लेकर पुणे तक कमरों से लाशों के ढेर बरामद हुए।

मार्च 2021 में एक पखवाड़े तक किए गए करीब डेढ़ दर्जन हिंदी अखबारों के एक कंटेंट विश्लेषण (पक्षकारिता, न्यूजलॉन्ड्री) में पाया गया था कि हिंदी पट्टी का ऐसा कोई इलाका नहीं है जो सामूहिक खुदकशी की घटनाओं से अछूता हो। बिहार के सुपौल में एक परिवार के पांच लोग 2021 के मार्च में फांसी पर झूल गए थे। इस परिवार के मुखिया मिश्रीलाल साहू बिजनेस करते थे। अंत तक परिवार को बचाए रखने के लिए कुछ भी कर गुजरने की उनकी जिजीविषा बताती है कि अपेक्षाकृत संपन्न मध्यवर्ग के लोग खुदकशी के फैसले पर आखिर क्यों और कैसे पहुंचते हैं।

साहू आर्थिक तंगी से गुजर रहे थे। परिवार को पालने के लिए साहू ने पहले ई-रिक्शा चलाया, फिर सेकंड हैंड ऑटोरिक्शा खरीद कर चलाया, उसके बाद कोयला भी बेचा था। दो साल से अपने हिस्से की जमीन बेच कर उनके परिवार का गुजारा चल रहा था। इस बीच उनकी बेटी किसी से साथ प्रेम प्रसंग में चली गई थी, भाइयों के साथ जमीन का विवाद भी चल रहा था, समाज में परिवार का उठना-बैठना बंद हो चुका था और मौत के छह महीने पहले से ही परिवार घर के बाहर दिखाई नहीं दिया था।

बिलकुल ऐसी ही कहानी दिल्ली के वसंत विहार जैसे पॉश इलाके में रहने वाले श्रीवास्तव परिवार की है। पिछले साल दिल्ली की सबसे हौलनाक घटनाओं में एक रहे सामूहिक खुदकशी के इस मामले में एक महिला मंजू श्रीवास्तव ने अपनी दो जवान बेटियों के साथ खुद को अपने फ्लैट में कैद करके उसे गैस चैम्बर बना लिया और जान दे दी। उनके पति उमेश श्रीवास्तव पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट हुआ करते थे जो 2021 में आई कोरोना महामारी की दूसरी लहर में गुजर गए थे। उसके बाद से परिवार की आर्थिक हालत नाजुक चल रही थी। बेटियां अकाउंटेंसी और फाइनेंस की पढ़ाई कर रही थीं जबकि राशन के दुकानदार और कामवाली के पैसे महीनों से बकाया थे। घटनास्थल से पुलिस को कुछ सुसाइड नोट मिले थे, जिनसे पता चलता था कि खुदकशी बहुत योजना के साथ अंजाम दी गई है। एक नोट पर लिखा था, 'हम जिंदगी से हार गए हैं।'

स्पष्ट है कि बिहार से लेकर दिल्ली तक मध्यवर्गीय पेशेवर और कारोबारी परिवारों की सामूहिक खुदकशी का मूल कारण आर्थिक संकट ही है, लेकिन विडम्बना है कि सरकार मौत के कारणों को खांचों में बांट कर देखती है। अपनी रिपोर्टों में एनसीआरबी खुदकशी के अलग-अलग कारण गिनवाता है, मसलन पारिवारिक समस्या, बीमारी, नशा, शादी-ब्याह, दिवालियापन या कर्जदारी, बेरोजगारी, परीक्षा में नाकामी, प्रेम प्रसंग, कैरियर, गरीबी, सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट, आदि। ये सब मिलाकर कुल कारणों का 75 प्रतिशत बनता है। हकीकत यह है कि ये सभी कारण एक ही स्रोत से जुड़े हैं, जो आर्थिक है। बस एक कारण दूसरे को पैदा करता है, और दूसरा तीसरे को।

इसके बावजूद मध्यवर्ग का ऐसा विरोधाभासी चरित्र है कि वह अंत तक अस्वीकार में जीना पसंद करता है। मसलन, लॉकडाउन से ठीक डेढ़ महीने पहले दिल्ली में एक कारोबारी अपने दो बच्चों के साथ मेट्रो के आगे कूद गया था। नोटबंदी के बाद से उसे लगातार घाटा हो रहा था। उसका कारखाना बंद हो चुका था। उसने दो अलग धंधों में किस्मत आजमायी। अपने फेसबुक पर वह लगातार प्रेरक उद्धरण लिखकर खुद को हौसला दिया करता था। एक दिन यह हौसला टूट गया। आज तीन साल बाद उनके एक परिजन फोन पर तल्खी से कहते हैं, 'फैक्ट्री तो पर्सनल ट्रैजडी के कारण बंद हुई थी। कोई क्राइसिस नहीं थी।'

व्यापार और निवेश के मामलों में 'सेंटिमेंट' यानी माहौल का बहुत महत्व होता है, इसीलिए यहां नकारात्मक बातें करना ठीक नहीं माना जाता है। शायद यही वजह है कि एनसीआरबी की 2021 की रिपोर्ट में कारोबारियों की खुदकशी के आंकड़े पर छिटपुट खबरों के अतिरिक्त कोई बहस नहीं हुई। ऐसी मौतें पीड़ित परिवारों का निजी विषाद बनकर रह गईं। प्रिंसटन युनिवर्सिटी के अर्थशास्त्री ऐना केस और एंगस डेटन ऐसी आत्महत्याओं को 'विषादग्रस्त मौतें' (डेथ ऑफ डिस्पेयर) कहते हैं। वे इनका सीधा सम्बंध 'मध्यवर्ग के खोखले होते जाने' के साथ जोड़ते हैं। इसे वे ऐसे समझाते हैं कि आज पूंजी का प्रवाह गरीबों से अमीरों यानी नीचे से ऊपर की ओर पहले से कहीं ज्यादा तेजी हो रहा है। अमीर और अमीर होते जा रहे हैं, गरीब और गरीब। इसके कारण सामान्य लोगों में लोकतंत्र और उसके लाभार्थी बन चुके एलीट तबके के खिलाफ असंतोष है। यही असंतोष दो तरीकों से अभिव्यक्त हो रहा है, जिसमें एक तरीका खुदकशी है।

दावोस में विश्व आर्थिक मंच के सम्मेलन की शुरुआत पर ऑक्सफैम इंटरनेशनल ने भारत में अमीरी और गरीबी के फर्क पर एक रिपोर्ट जारी की है जिसका शीर्षक है सर्वाइवल ऑफ द रिचेस्ट, जिसका अर्थ बनता है अमीरों की उत्तरजीविता। नाम से जाहिर है कि चार्ल्स डार्विन के सिद्धांत सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट से यह शीर्षक लिया गया है। मुहावरे में देखें तो रिपोर्ट का सार यही है कि जो सबसे अमीर होगा वही बचा रहेगा, बाकी विलुप्त हो जाएंगे। निश्चित तौर पर भारत में ऐसी स्थिति अब तक तो नहीं आई है, लेकिन उसकी जमीन तैयार हो चुकी है।

जो लोग खुदकशी नहीं कर पा रहे हैं, दार्शनिक स्लावोज जिजेक के मुताबिक वे 'सरप्लस एन्जॉयमेन्ट' (अतिरिक्त भोगविलास) की ओर प्रवृत्त हैं। जिजेक कहते हैं कि यूरोपीय आधुनिकता ने उदार लोकतंत्र की स्थापना करके हमें संयमित करने या थामने वाली सरपरस्ती की परंपरागत प्रथाओं (मास्टर) से महरूम कर दिया है, जैसे परिवारों में पिता होता था या काम पर मालिक। अब हम आजाद हैं। चुनने के लिए आजाद। बिना यह जाने कि हमारे चुनने की आजादी भी एक छलावा ही है। इस आजादी को नियंत्रित कर रही ताकतों से अनजान रहते हुए हम जब अपना असंतोष जाहिर करने चलते हैं, तो वह दो ही रास्तों पर जा सकता है। या तो वह प्रतिक्रिया में तमाम प्रतिगामी चीजों, जैसे नस्लवाद, अश्लील उपभोग, अंधराष्ट्रवाद, नफरत, यौनाचार की राह पकड़ लेगा जिसे अंततः निरंकुश सत्ताएं अपने हक में भुना ले जाती हैं। या फिर इनसान परित्यक्त-भाव में अकेला पड़कर खुदकशी कर लेगा।

कुछ दिनों पहले गायक हनी सिंह ने बयान दिया था कि यदि उनका परिवार उनके साथ न होता तो वे भी सुशांत सिंह राजपूत की तरह आत्महत्या कर बैठते। वे कहते हैं कि परिवार ने उन्हें बचा लिया। उनकी यह बात मध्यवर्ग पर लागू क्यों नहीं हो पा रही? परिवार यहां अपने प्रियजन को क्यों नहीं बचा पा रहे? पूरे के पूरे परिवार ही सुसाइड क्यों कर ले रहे हैं? यहां जिजेक की व्याख्या काम आती है। मनुष्य को थामने वाला परंपरागत 'मास्टर' आभासी आजादियों वाले उदार लोकतंत्र में खत्म किया जा चुका है, तो ऐसे में आदमी पूरे प्रतिशोध की भावना से पलटवार करता है। जैसा कि होर्हे लुई बोर्हेस अपनी एक कविता 'आत्महत्या' में लिखते हैं, '...मैं मरूंगा और मेरे साथ खत्म होगा / असहनीय ब्रह्माण्ड का सारांश... किसी को कुछ भी नहीं दूंगा मैं वसीयत में।' जिजेक इसे पुराने 'मास्टर' की वापसी कहते हैं। यह संज्ञा या तो आदमी के असंतोष को अपने हक में खींच लेती है या फिर उसे निस्सहाय मरने को छोड़ देती है। हां, वह असंतोष को किसी दिशा में एकजुट नहीं होने देती। इसीलिए मध्यवर्गीय कारोबारी तबके के बीच बढ़ते खुदकशी के मामलों का जितना आर्थिक तंगी, आय, कर्ज आदि से लेना-देना है उतना ही यह सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक मसला भी है।

इस सवाल को केवल आर्थिक व्याख्या से नहीं समझा जा सकता। जिंदा रहने, एकजुट होकर या अकेले प्रतिरोध करने या अश्लील उपभोक्ता बन जाने के पीछे आर्थिक से इतर भी कुछ और प्रेरणाएं काम करती हैं। न्यूयॉर्क युनिवर्सिटी में समाजशास्त्र के प्रोफेसर विवेक छिब्बर मनुष्य के सामाजिक जीवन की व्याख्या महज आर्थिक चिंताओं तक केंद्रित कर देने को मानवीय प्रेरणाओं की विविधता के साथ हिंसा मानते हैं। दिल्ली की जामिया मिलिया युनिवर्सिटी में हाल में दिए अपने एक व्याख्यान में वे कहते हैं कि सामाजिक कर्ता को आर्थिक साध्य तक सीमित कर देना उसे भोगवादी समझ लेने की गलती है। बाकी सभी इनसानी प्रेरणाएं व्यवहार में मूल आर्थिक प्रेरणा पर ही टिकी होती हैं इसीलिए अंततः आर्थिक प्रेरणा का खत्म होना जीवन के अंत का कारण जान पड़ता है।

जीने के लिए सांस्कृतिक प्रेरणाओं का संकट मध्यवर्ग में बहुत गहरा है। वह मध्यवर्ग ही है जो सबसे ज्यादा अपने अतीत और परंपरागत ढांचों से कट चुका है। दूसरी ओर, भविष्य में क्या होगा इसका उसे कोई अंदाजा नहीं है। यह अस्थिरता सबसे ज्यादा मध्यवर्ग के युवाओं में दिखती है। पहली बार 2020 में बेरोजगार युवाओं में खुदकशी करने वालों की संख्या 3000 को पार कर गई। उस साल रोजाना 418 व्यक्तियों ने अपनी जान दी, जिनमें सर्वाधिक संख्या विद्यार्थियों की थी। इसकी प्रतिक्रिया में भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलूरू ने एक अजीब उपाय किया और अपने छात्रावासों के कमरों से सीलिंग फैन उतार दिए। मेरठ के देवनागरी कॉलेज में अंग्रेजी के विभागाध्यक्ष डॉ. पृथ्वीराज सिंह चौहान पूछते हैं, 'क्या खुदकशी पंखे से लटकने की कोई प्रक्रिया है कि साधन के अभाव में रुक जाएगी?'

कतई नहीं! आज से सवा सौ साल पहले 1897 में एमील दुर्खेम ने पहली बार दुनिया को यह सिखाया था कि कोई भी खुदकशी निजी नहीं होती, सामाजिक होती है। हर खुदकुशी समाज व्यवस्था पर एक टिप्पणी है। हाल के दिनों में एक विद्यार्थी ने अपनी जान देकर समाज को इस सबक की याद फिर दिलाई। आज से सात साल पहले यही मौसम था जब हैदराबाद में रोहित वेमुला ने फांसी लगाई थी। आत्महत्या पर लिखे साहित्य के इतिहास में दुर्खेम की 'ला सुसाइड' के बाद रोहित का अंतिम पत्र एक अमर कृति माना जा सकता है। यह पत्र इस व्यवस्था में घुट रहे लोगों की चुप्पियों को स्वर दे सकता है, उनके अहं को तोड़ सकता है और हर खुदकशी को निजी कारणों से जोड़ने की साजिशों का परदाफाश कर सकता है।

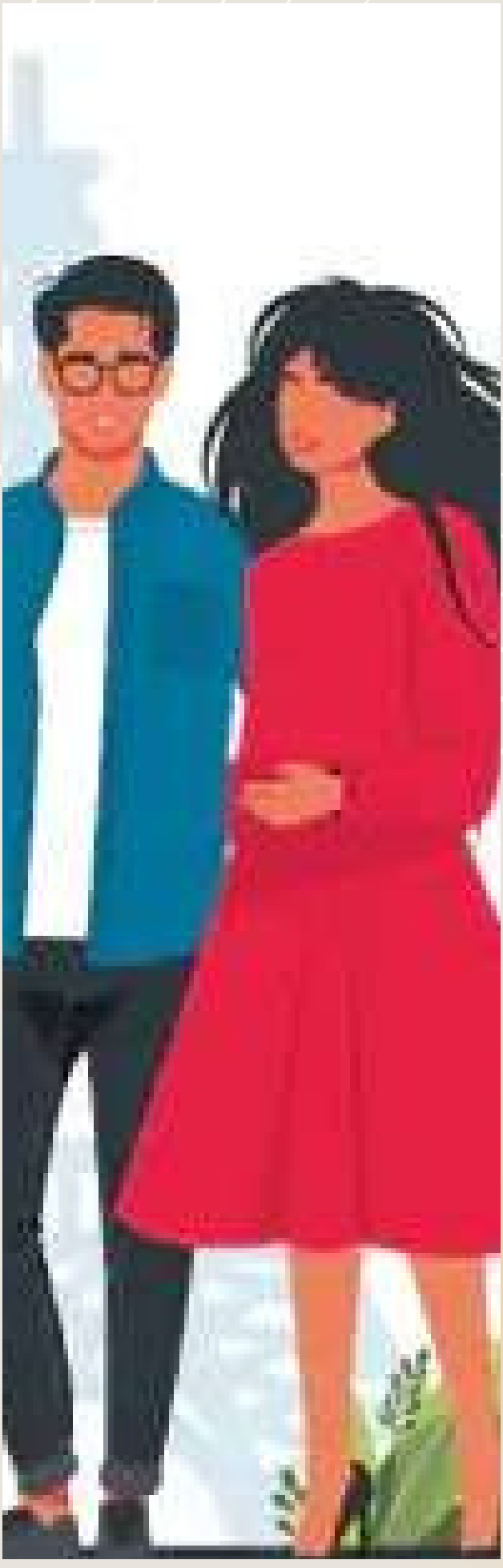

आप भी लिखिए हमें भेजिए 8264173026

राजस्थान

लाठी कस्बे में भूमाफियाओं के बुलंद हौसले के चलते नहीं हुआ होलिका दहन का कार्यक्रम

-आनंद शर्मा

होली के त्योहार को लेकर जहां हर कोई देश भर में उत्साह है। वहीं असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक होलिका दहन का कार्यक्रम सरहदी जिले के एक कस्बे नहीं हो सका। यहां भूमाफियाओं के बुलंद हौसले और प्रशासन की शय के चलते यहां होलिका दहन नहीं हुआ। हम बात कर रहे हैं जैसलमेर के लाठी कस्बे की। लाठी कस्बे के पालीवाल समाज की ओर से होलिका दहन का बहिष्कार करते हुए लगातार दूसरी बार भी होली पर्व नहीं मनाने का निर्णय लिया गया है।लाठी पालीवाल समाज ने 2022 में भी होली नहीं मनाई थी।

जिला प्रशासन को दी जा चुकी है शिकायत

पालीवाल समाज का कहना है कि उनके ओर से 2 वर्षों से होलिका दहन कार्यक्रम का बहिष्कार किया जा रहा है। इसका कारण यह है कि जहां सदियों से पालीवाल समाज के लोगों की ओर से होलिका दहन किया जाता था। उस स्थल पर गांव के कुछ लोगों की ओर से अतिक्रमण कर दिया गया है। इस संबंध में जिला प्रशासन को भी कई बार अवगत करवाया गया, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इससे पालीवाल समाज में काफी रोष है। इनके ओर से होलिका दहन करके अपनी नाराजगी जताई जा रही है।

होलिका दहन के लिए आवंटित है स्थान

लाठी कस्बे के होलिका दहन के लिए जो पट्टासुदा स्थान आवंटित है। उस पर भूमाफियाओं का कब्जा हो चुका है। इसको लेकर पालीवाल समाज के घनश्याम पालीवाल सहित समाज के अन्य लोगों ने एक वीडियो जारी किया है। वीडियो में पालीवाल समाज के घनश्याम पालीवाल ने बताया कि गांव में पालीवाल समाज का वर्षो पुराना पट्टासुदा होलिका दहन स्थल आवंटित है, लेकिन कुछ समय पहले गांव के कुछ लोगों की ओर से उस स्थल पर अतिक्रमण कर लिया गया है। इससे अब होलिका दहन स्थान भू –माफियों के कब्जे में आ गया है। अतिक्रमण हटाने को लेकर हमारे ओर से प्रशासनिक अधिकारियों को बार–बार अवगत करवाने के बावजूद अतिक्रमण नहीं हटाया गया है। ऐसे में पालीवाल समाज में भारी आक्रोश व्याप्त है और इसी को लेकर हमने होली का पर्व नहीं मनाया है।

NEW BROTHERS BAKERS & RESTAURANT

PHONE - 8052442127/ 6388418753

DISCOVER A NEW LEVEL OF TASTE

FULWARIYA ROAD, NEAR THANA GATE

BHATPARRANI, DEORIA UTTAR PRADESH

kvishal748@gmail.com

Explore the latest and
trendiest wedding collections.
BANSALS
TRICITY'S BIGGEST
FASHION MALL
WEDDING SEASON
Sale
FLAT
40% off
Suits, Sarees, Dress,
Kurtis, Readymade Suits,
Lehangas, Bridal Wear,
Pashmina Shawls
Check out the latest collections of
SAREES
Daj & Wari Specialist
Latest Bridal collection
NOW IN STORE
BANSALS
SCO 86-87, SECTOR 17C, CHANDIGARH
BANSAL TEXTILES
SCO 65-66-67, SECTOR 17C, CHANDIGARH

'WORLD'S
GREATEST
PLACES TO
VISIT IN
2022'
TIME
CATCH UP WITH
NATURE
PACK UP FOR
KERALA
kerala
God's Own Country
keralatourism.org
kerala
God's Own Country
keralatourism.org

समाचार दर्पण 24

हिंदी पाक्षिक पत्रिका

पृष्ठ 18